अगस्त-२०२३ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त-२०२३

जो नर है स्वाधीन वही सुख पाता,
निज निश्चय, अनुकूल कर्म कर पाता।
केवल तभी कर्मकर्त्ता कहलाता,
और तभी प्रभु से उसका फल पाता।
कौन कर्मफल का बनता उत्तरदाई,
सत्यार्थप्रकाश में ऋषि ने यह गुत्थी सुलझाई।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १५ १४२

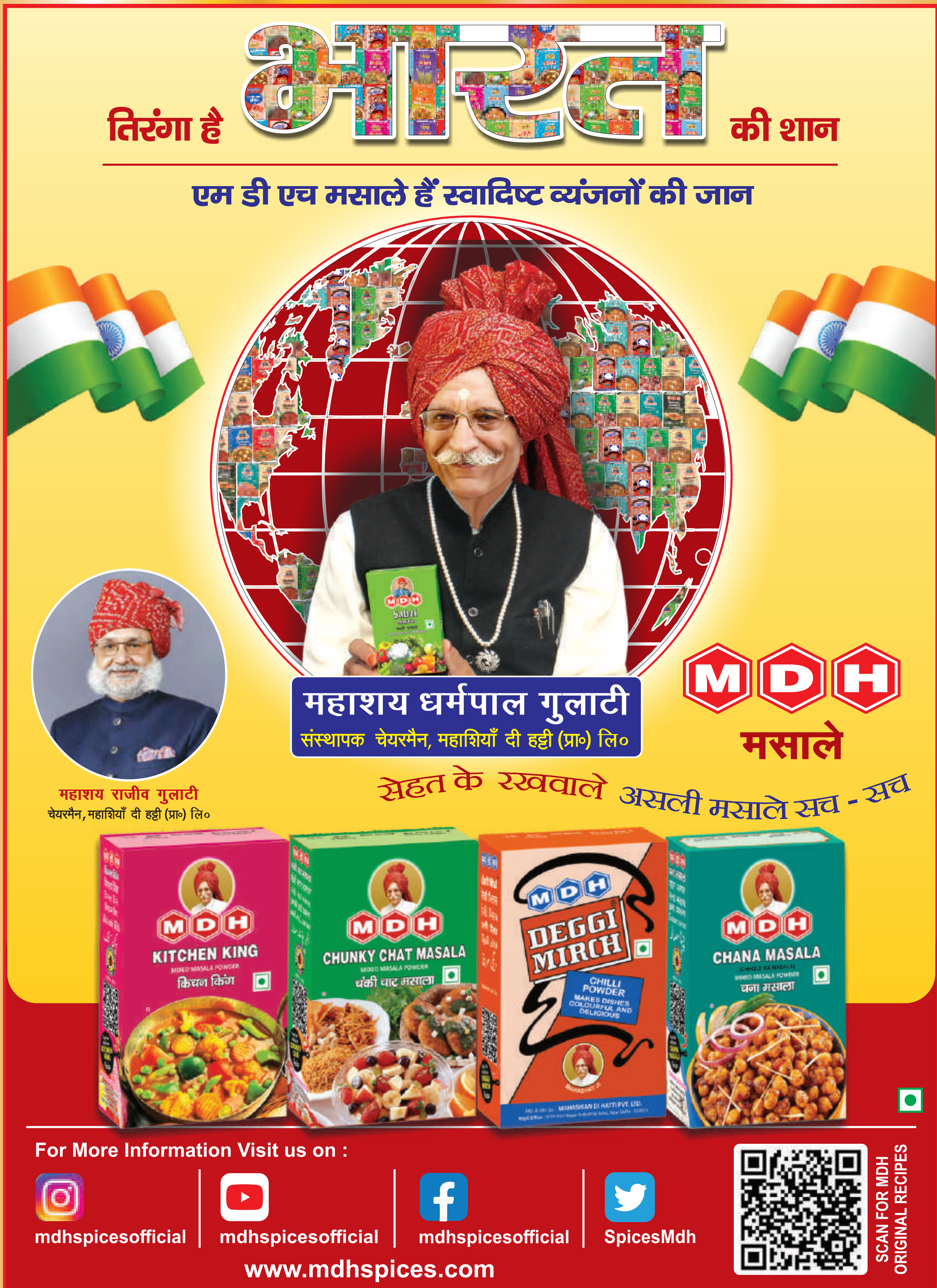

तिरंगा है भारत की शान
एम डी एच मसाले हैं स्वादिष्ट व्यंजनों की जान
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
KITCHEN KING
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२४
श्रावण कृष्ण सप्तमी
विक्रम संवत् २०८०
दयानन्दाब्द १९९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

August - 2023

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४ वेद सुधा
०५ सत्यार्थ मित्र बनें
११ स्वा. तत्त्वबोध स. स्मृति दिवस
१२ आदिपुरुष
१५ स्वराज्यऔर वेद
१९ स्वा. द. स. को वेदविषयक ...
२५ स्वास्थ्य- अम्लपित्त
२६ कथा सरित- कहानी दयानन्द की
३० ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १२ | अंक -०४ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मुझे आश्रय दो

य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन्त्वामागांसि कृणवत्सखा ते।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन्भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम्।। - ऋग्वेद ७/८८/६

ऋषिः- **वसिष्ठ**।। देवता- **वरुणः**।। छन्दः- **निचृत्त्रिष्टुप**।।

विनय- हे जगदीश्वर! यह जीव तुम्हारा सनातन बन्धु है, यह तुमसे पृथक् नहीं हो सकता। जीव चाहे कितना पतित हो जाए, वास्तव में तो यह स्वरूपतः चेतन आत्मा ही है। इस जीवात्मा में तुम सदा स्वामी (संचालक) होकर व्याप्त हो और तुममें यह जीवात्मा सदा आश्रित है। एवं जीव सदा तुम्हें प्राप्त तुम्हारा 'आपिः' है, सदा

तुमसे बँधा हुआ तुम्हारा बन्धु है, तुम्हारा सखा है। यह तुम्हारा साथी तुम्हें इतना प्रिय भी है कि तुमने स्वयं कुछ न भोगते हुए भी इस जीव के भोग के लिए ऐश्वर्यों से भरा यह सब संसार खोलकर रख दिया है, परन्तु फिर भी यह जीव-यह तुम्हारा ऐसा प्यारा सखा जीव-इस संसार में तुम्हारे प्रति अपराध करता रहता है, तुम्हारे नियमों का भंग कर तुम्हें अप्रसन्न करता रहता है।

हे यजनीय देव! हम जीवों को इस प्रकार तुम्हारे प्रति अपराधी होने पर क्या करना चाहिए? हमें यह चाहिए कि हम पापी होने पर तुम्हारे दिये गये भोगों को त्याग दिया करें। हे यक्षिन्! पाप करते ही हमारे द्वारा तुम्हारे यज्ञ का भंग हो जाता है और मनुष्य को बिना यज्ञ किये भोग भोगने का अधिकार नहीं है, अतः पापी होकर हमें भोग-त्याग कर देना चाहिए, किसी भोग के त्याग के रूप में उस पाप का प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए। पापी होने पर भोग कभी न करें- ऐसा करने से हमें तुम एक 'वरूथ' अर्थात् सुरक्षित घर वा आश्रय दे देते हो। हे जगदीश्वर! तुम सर्वज्ञ हो, मेरे हृदय को जानते हो, मुझ अपने उपासक के सब सच्चे भावों को जानते हो, अतः अब जब कभी मुझसे तुम्हारे किसी नियम का भंग होगा तो मैं किसी भोग के त्यागने के द्वारा तेरी शरण में आने के लिए अपने हाथ फैलाऊँगा। हे विप्र! हे स्वामिन्! तब मुझे अपना वरूथ' अवश्य प्रदान कीजिएगा, हाथ फैलाये हुए मुझे अपनी गोद में स्थान देकर सुरक्षित कीजिएगा, कुछ समय के लिए अपने घर में मुझे आश्रय दीजिएगा, जिससे पवित्र होकर आगे के लिए मैं वैसा नियम भंग करने से अलग रहूँ ।

शब्दार्थ- **वरुण**= हे वरुण! **यः नित्य आपिः**= जो तेरा सनातन बन्धु है वह, **ते सखा**= तेरा साथी **प्रियः सन्**= तेरा प्यारा होता हुआ भी **त्वां आगांसि कृणवत्**= तेरे प्रति पाप, अपराध किया करता है। **यक्षिन्**= हे यजनीय देव! **एनस्वन्तः**= पापी होते हुए हम **ते मा भुजेम**= तेरे दिये भोग न भोगें। **विप्रः स्तुवते वरूथं यन्धि स्म**= इस प्रकार तुम सर्वज्ञ मुझ उपासक को अपनी शरण या घर दे दो।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
साभार- वैदिक विनय

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यो को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है।सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है।इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है। वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है।परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर

बैंक एकाउन्ट का विवरण :

AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001
में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

श्रीमती सविता बेरी
गंगानगर

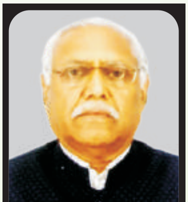
श्री अशोक आर्य
सिलीगुडी

श्री रमेश चन्द्र आर्य
मथुरा

श्री मयंक सूद
कण्डाघाट (हि.प्र.)

श्री सतीश आर्य
उदयपुर

श्री सुभाष चन्द्र आर्य
सिलीगुडी

श्रीमती अपर्णा शुक्ला
पुणे

श्री मनोज आर्य
सोनीपत

समान नागरिक संहिता का उल्लेख संविधान के भाग ४ में किया गया है, जिसमें कहा गया है कि 'राज्य भारत के पूरे क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करेगा'। (आर्टिकल ४४-संविधान)। संविधान निर्माताओं ने कल्पना की थी कि कानूनों का एक समान प्रारूप होगा जो विवाह, तलाक, विरासत और गोद लेने के संबंध में हर धर्म के व्यक्तिगत कानूनों की जगह लेगा। परन्तु यह आज तक पूरी तरह नहीं हो पाया, कारण केवल तुष्टीकरण से राजनीतिक लाभ पाने की अदम्य लालसा।

"A common civil code will help the cause of national integration by removing disparate loyalties to law which having conflicting ideologies,"

यह कहना था आज के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पिता वाई. वी. चन्द्रचूड़ का। आज से लगभग ३५ वर्ष पूर्व शाहबानो केस में इस टिप्पणी को एक विद्वान् मनीषी की तर्कशीलता का प्रतिस्वर कहा जा सकता है। वह भी वो जो उच्चतम पद पर आसीन था। शाहबानो और उस जैसी महिलाओं को मुस्लिम कानून कोई रियायत नहीं देता। इस और ऐसी ही अन्य अन्याय पूर्ण व्यवस्थाओं का सार्वकालिक समाधान समान नागरिक संहिता ही है।

यही नहीं बाद में भी उच्च न्यायलय के समक्ष सरला मुद्‌गल का मामला आया। १९९५ के सरला मुद्‌गल मामले में द्विविवाह और विवाह के मामलों में व्यक्तिगत कानूनों के बीच संघर्ष से सम्बन्धित मुद्दा था। सुप्रीम कोर्ट ने फिर से समान नागरिक संहिता की आवश्यकता बताई थी। तब कोर्ट ने प्रधान मन्त्री से अनुच्छेद-४४ पर नए सिरे से विचार करने और भारत में नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता के लिए प्रयास करने को कहा था। सरला मुद्‌गल केस क्या था? सरला मुद्‌गल एक NGO की अध्यक्ष थी। एक महिला मीना माथुर के पति ने दूसरा विवाह करने के लिए इस्लाम मत को अपना लिया और दूसरा विवाह कर लिया। क्योंकि उस समय में जो हिन्दू विवाह अधिनियम था उसमें बहुविवाह की अनुमति नहीं थी, हिन्दू व्यक्ति एक ही विवाह कर सकता था। परन्तु दूसरी ओर मुस्लिम पर्सनल लॉ के अनुसार एकाधिक विवाह किया जा सकता था। इस प्रकार एक ही देश में रहने वाले दो प्रकार के व्यक्तियों के लिए अलग-अलग व्यवस्था प्रकाश में आई जो कि तर्क के आधार पर उचित नहीं थी। माननीय उच्चतम न्यायालय ने भी इस पर आपत्ति प्रकट की और उस विवाह को अमान्य

घोषित कर दिया, साथ में कहा समान नागरिक संहिता को लाने के लिए सरकार को कानून बनाना चाहिए। न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह ने कहा, 'ऐसा प्रतीत होता है कि...आज के शासक अनुच्छेद ४४ को ठण्डे बस्ते से वापस लाने के मूड में नहीं हैं, जहाँ यह १९४९ से पड़ा हुआ है।'

एक और इसी प्रकार का मुकदमा माननीय उच्चतम न्यायालय के सामने आया। यह एक ईसाई मत से सम्बन्धित व्यक्ति का था। अल्बर्ट एंथोनी ने तलाक अधिनियम, १८६९ की धारा १० (ए) १ की वैधता को चुनौती देते हुए कहा था कि अलगाव की दो साल की अनिवार्य अवधि ईसाई समुदाय के प्रति पक्षपातपूर्ण थी, जो 'शत्रुतापूर्ण भेदभाव' के बराबर थी।

एंटोनी ने न्यायालय के समक्ष यह गुहार लगाई कि जब आपसी सहमति से विवाह-विच्छेद की बात सामने आती है तो विवाह-विच्छेद के लिए प्रतीक्षा अवधि, जो अवधि अन्य मतों के लिए विहित थी वह १ वर्ष थी (उस समय) जबकि ईसाई मत वालों के लिए यह २ वर्ष थी। इस समय भी सुप्रीम कोर्ट ने संविधान की धारा ४४ का हवाला देते हुए सरकार को समान नागरिक संहिता बनाने के लिए निर्देशित किया था। न्यायमूर्ति विक्रमजीत सेन की अध्यक्षता वाली पीठ ने १३ अक्टूबर २०१५ को सरकार से व्यक्तिगत सामुदायिक कानूनों पर भ्रम को खत्म करने के लिए समान नागरिक संहिता पर त्वरित निर्णय लेने को कहा था।

१३ सितम्बर २०१९ को पाउलो कान्टिन्हो बनाम मारिया लुइजा वेलेंटीना परेरा मामले में न्यायाधीश दीपक गुप्ता ने निराशा व्यक्त करते हुए कहा था- 'यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि जबकि राज्य के नीति निदेशक सिद्धान्तों से सम्बन्धित भाग IV में अनुच्छेद ४४ में संविधान के संस्थापकों ने आशा और उम्मीद की थी कि राज्य भारत के सभी क्षेत्रों में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा, आज तक इस सम्बन्ध में कोई कारवाई नहीं की गयी। हालाँकि हिन्दू कानूनों को वर्ष १९५६ में संहिताबद्ध किया गया था, लेकिन अन्यों के मामले में इस न्यायालय के उपदेशों के बावजूद देश के सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता लागू करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है।'

तो इस प्रकार से उच्चतम न्यायालय का मत लगभग स्पष्ट है कि विभिन्न अवसरों पर उच्चतम न्यायालय ने समान नागरिक संहिता लाने का न केवल समर्थन किया बल्कि सरकार को एक प्रकार से कई बार चेताया कि उसे नीति निर्देशक तत्व में शामिल इस आवश्यक कदम को उठाना चाहिए और वह उठाने में हिचक क्यों रही है? जबकि यह उसका कर्तव्य है कि उसे समान नागरिक संहिता लागू करनी चाहिए। तो इस प्रकार अगर केन्द्र सरकार समान नागरिक संहिता लाती है तो लगता नहीं कि उसमें सुप्रीम कोर्ट किसी प्रकार का अडंगा लगाएगी।

अब बात आती है उन मुस्लिम धार्मिक नेताओं की जो सदैव इस प्रकार के प्रयासों का विरोध करते हैं। उन्हें यह सोचना चाहिए कि उनके समाज में जो अमानवीय तथा पक्षपातपूर्ण नियम हैं क्या उनको दूर करने का समय अब भी नहीं आया है? क्या मुस्लिम महिलाओं को सशक्त बनाना, उन्हें बराबरी का दर्जा देने का उपक्रम प्रशस्त नहीं हैं? उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि जब हिन्दू कोड बिल लाया गया था तब उसका हिन्दुओं ने कितना विरोध किया था। संविधान सभा में डॉक्टर बी. आर. अम्बेडकर और जवाहरलाल नेहरू आदि अनेक नेता व्यक्तिगत कानूनों में संशोधन करना चाहते थे परन्तु हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य मतों के व्यक्तिगत कानून को नहीं छेड़ पाए इसलिए उन्होंने हिन्दू कोड बिल लाया। इसका दो आधार पर विरोध किया गया। एक तो यही कि जो लोग यह मानते थे कि यह हिन्दू धर्म से सम्बन्धित विषय हैं इन पर सरकार को कोई कदम नहीं उठाना चाहिए इनको यथावत् रहने देना चाहिए और दूसरा जो सबसे प्रबल तर्क था कि जब अन्य मतों के लिए उनके अपने

व्यक्तिगत कानूनों को रखने की छूट दी जा रही है तो केवल हिन्दू व्यक्तिगत कानूनों को बदलने के लिए हिन्दू कोड बिल क्यों लाया जा रहा है। इस बात को भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी तक ने कहा। कहा ही नहीं नेहरू जी को पत्र भी लिखा। उस समय क्या हुआ कैसे हुआ इस सब का विश्लेषण तो बहुत लम्बा हो जाएगा इसलिए वह सब न लिखते हुए यह अवश्य लिखना चाहेंगे कि तात्कालिक समाचार पत्रों में हिन्दू कोड

बिल लाने के प्रबल समर्थक नेहरू और बी.आर. अम्बेडकर को महिलाओं का उद्धार करने वाला माना गया। हिन्दू कानूनों के अन्तर्गत जो कुरीतियाँ घर कर गई थीं और जिनसे प्रभावित विशेष रूप से हिन्दू महिलाएँ होती थीं, जैसे उस समय हिन्दू पुरुष को अनेक विवाह करने की छूट थी परन्तु महिला विधवा होने के पश्चात् भी विवाह नहीं कर सकती थी। सम्पत्ति का जहाँ तक प्रश्न था उसके पास कोई अधिकार नहीं थे, इत्यादि-इत्यादि अनेक कुरीतियाँ थीं, हिन्दू कोड बिल द्वारा उनको दूर किया गया।

फरवरी १९४९ को संविधान सभा की बैठक में नेहरू ने कहा था, 'इस कानून को हम इतनी अहमियत देते हैं कि हमारी सरकार बिना इसे पास कराए सत्ता में रह ही नहीं सकती।'

वहीं अम्बेडकर हिन्दू कोड बिल पारित करवाने को लेकर काफी चिन्तित थे। वे कहते थे, 'मुझे भारतीय संविधान के निर्माण से अधिक दिलचस्पी और खुशी हिन्दू कोड बिल पास कराने में है।' लेकिन यह बिल उस समय पारित नहीं हो सका। अम्बेडकर ने हिन्दू कोड बिल समेत अन्य मुद्दों को लेकर कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया।

तो हम यहाँ यह निवेदन करना चाह रहे हैं कि उस समय में हिन्दू व्यक्तिगत कानूनों में सुधार करना हिन्दू महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए, उनको शक्ति प्रदान करने के लिए, समाज में उनका स्थान बेहतर करने के लिए और उनकी प्रगति के लिए यह आवश्यक समझा गया था तो फिर क्या यही तर्क अन्य अल्पसंख्यक मतों की महिलाओं के लिए नहीं होना चाहिए? स्वतंत्रता के ७५ वर्ष बाद भी वे शोषण, अन्याय और कुरीतियों को झेलती रहें, क्योंकि राजनीतिक कारणों से हम ऐसा नहीं करना चाह रहे? क्योंकि वहाँ भी जितनी कुरीतियाँ हैं वे प्रमुखतः महिला को ही प्रभावित करती हैं। बहु-विवाह, तलाक, हलाला इत्यादि में कौन पिस रहा है? और सम्पत्ति में अधिकार, गुजारा भत्ता की बात करें तो न्यायालय में सबसे पहले शाहबानो के समय में ही यह बात प्रभावशाली रूप से सामने आई थी। क्योंकि मुस्लिम लॉ में तलाक देने के बाद इद्दत के समय तक कुछ गुजारा भत्ता देने के बाद कुछ भी नहीं देने का प्रावधान है। उच्चतम न्यायालय ने इस को अत्यन्त अनुचित और अमानवीय माना और शाहबानो के केस में निर्णय दिया उसको गुजारा भत्ता देने का। बस यह होना था कि जैसे तूफान आ गया। तत्कालीन सरकार ने तुष्टीकरण की राजनीति के अन्तर्गत

शाहबानो के फैसले को कानून लाकर के पलट दिया। जबकि यह समान नागरिक संहिता को लाने की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम हो सकता था।

यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दू कोड बिल लाकर के हिन्दुओं में व्याप्त कुरीतियों को हटाने का सबसे बड़ा कार्य नेहरू जी ने प्रथम चुनाव के बाद ५५ के दशक में हिन्दुओं के जितने भी व्यक्तिगत कानून हैं, उनमें परिवर्तन ला करके किया तो आज उन्हीं की परम्परा को त्यागा जा रहा है यह विडम्बना नहीं तो और क्या है? उनके उत्तराधिकारी समान नागरिक संहिता का क्योंकर विरोध कर रहे हैं? यह बड़ी विचित्र बात है कि एक ही देश में रहने वाले लगभग ८०% लोगों पर जो व्यक्तिगत कानून लागू होता था उसको सशोधित करने में, उसमें मूलभूत परिवर्तन लाने में तो आप कारक बने, पर अन्य मतों के व्यक्तिगत कानून को सुधारने का जो उद्यम है उसमें आप सहमत नहीं है? यह मात्र दोहरा चरित्र है।

यहाँ हम यह बात विशेष रूप से लिखना चाहेंगे कि हिन्दुओं के व्यक्तिगत कानूनों में संविधान सभा के समक्ष जिन बुराइयों को रखा गया, यह सत्य है कि उस समय वे कुरीतियाँ और उनसे सम्बन्धित प्रावधान हिन्दू कानूनों में थे परन्तु यह सारे के सारे गुलामी के समय की उपज थे। और एक आर्य समाजी होने के नाते यह भी लिखना चाहूँगा कि महर्षि दयानन्द, आर्य समाजी और हम, उन कुरीतियों को दूर करने के समर्थक तब भी थे और अब भी हैं। यह कभी लोगों के समक्ष लाया नहीं गया। अच्छे-अच्छे लोगों ने यही लिखा कि हिन्दुओं के कानूनों को बदलना इसलिए आवश्यक था क्योंकि वे अमानवीय थे, महिलाओं के विरोधी थे इत्यादि इत्यादि। परन्तु किसी ने यह नहीं बताया कि कुछ सौ वर्ष पूर्व तक हिन्दुओं की यह स्थिति नहीं थी। यह जितनी भी कुरीतियाँ हैं अर्वाचीन हैं..

महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार इन सब व्यवस्थाओं पर आर्यों का क्या मत था उस पर प्रकाश डाला है।

बहु-विवाह ...महर्षि दयानन्द आज से १५० वर्ष पूर्व सत्यार्थप्रकाश में बहु-विवाह का स्पष्ट निषेध करते हैं देखिये- (प्रश्न) स्त्री और पुरुष का बहु-विवाह होना योग्य है वा नहीं? (उत्तर)- युगपत न अर्थात् एक समय में नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

एक पति-पत्नीव्रत वेद में स्पष्ट निर्देश है कि वर वधु एक पति और एक पत्नी व्रत का पालन करेंगे। विवाह संस्कार में भी एक मंत्र में यही बात रेखांकित की गई है।

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद्बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्॥ - अथर्ववेद १४/१/५२

जैसे आप मेरे सिवाय दूसरी किसी स्त्री से प्रीति न करोगे वैसे मै भी किसी दूसरे पुरुष के साथ प्रीति भाव से न वर्त्ता करूँगी। आप मेरे साथ सौ वर्ष पर्यंत आनन्द से प्राण धारण कीजिए। (संस्कार विधि- महर्षि दयानन्द)

विवाह के समय पर आयु- इस के संदर्भ में एक नहीं अनेक निर्देश हैं जिसमें यह बात कही गई है कि पूर्ण युवावस्था आने पर ही युवक व युवती को विवाह करना चाहिए।

दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः।
सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः॥ - ऋग्वेद ५/४२/१२

कन्या और वर जब ब्रह्मचर्य्य से विद्यायें पूर्ण युवावस्था और परस्पर की परीक्षा होवे, तब स्वयंवर विवाह से पति और पत्नी होकर सौभाग्यवान् होते हैं।

इस एक मन्त्र में विवाह के सम्बन्ध में अनेक निर्देश प्राप्त होते हैं जिनका पालन प्रत्येक आर्य वा हिन्दू को करना चाहिए वरन् यह कहें तो अधिक सत्य होगा प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए।

इस मन्त्र में कहा है कि वर और कन्या का गृहस्थ तभी सुखी होता है जब-

१. दोनों ने ब्रह्मचर्य पूर्वक पूर्ण विद्या ग्रहण कर ली हो।

२. आयु- दोनों पूर्ण युवा हों।

३. एक दूसरे के गुण-कर्म-स्वभाव के बारे में दोनों ने जान लिया हो।

४. वर-कन्या कि सहमति से स्वयंवर विवाह (यहाँ यह और स्पष्ट कर दें कि माता-पिता के आशीर्वाद एवं विवाह कि प्रसिद्धि के निर्देश भी ऋषि ने दिए हैं)

महर्षि दयानन्द तो इस बात के इतने पक्षधर थे कि उन्होंने तो यहाँ तक लिख दिया था कि भारतवर्ष के बिगाड़ का सबसे बड़ा कारण बाल्यावस्था में विवाह है। वे लिखते हैं- **'जो ब्रह्मचर्य धारण, विद्या, उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये विना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते हैं, वे स्त्री-पुरुष नष्ट-भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते।'**

वैदिक संस्कृति और शिक्षा जब तक समाज में प्रभावी रही एक भी कुरीति आर्यों के निकट या दूसरे शब्दों में कहें तो हिन्दुओं के निकट फटकी तक भी नहीं। परन्तु उसके पश्चात् जब वैदिक शिक्षाएँ दूर होने लगी तो नाना प्रकार की कुरीतियों का प्रवेश हुआ। आर्य समाज ने अपने जन्म से ही उन कुरीतियों का जबरदस्त विरोध किया। न केवल विरोध किया बल्कि जन जागरूकता लाकर के कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। जैसे विधवाओं का विवाह तत्कालीन हिन्दू धर्म में एक अजूबा था, पर आर्य समाज ने न केवल इसको मानवीयता और समानता के आधार पर उचित ठहराया बल्कि उस समय के आर्य समाज के अनेक महापुरुष ऐसे हुए जिन्होंने स्वयं विधवा विवाह किया।

सर्वविदित है कि विवाह योग्य आयु को बढ़ाने के सन्दर्भ में आर्य समाज ने जो काम किया उसी के फलस्वरूप शारदा एक्ट पारित हुआ। उस समय में हिन्दू व्यक्तिगत कानूनों में अन्तर्जातीय विवाह और अन्तरमतीय विवाह अधिकृत नहीं थे। आर्य समाज ने इसके लिए आवाज उठाई। उसके फलस्वरुप १९३७ में आर्यन मैरिज वैलिडेशन एक्ट पारित हुआ जिसके अन्तर्गत अन्तर्जातीय और अन्तर्धार्मिक विवाह अधिकृत किए गए। यही आगे चलकर के हिन्दू मैरिज एक्ट में इनसे सम्बन्धित दोनों प्रावधानों को हटाने का कारण बना।

तो इस प्रकार से इस पूरे विवरण में हमने देखा कि सुधार के दृष्टिकोण से ऐसी व्यवस्थाओं को दूर करना स्वागत योग्य कदम है। अन्तर केवल इतना है कि हिन्दुओं ने इन सुधारों का देर सवेर से स्वागत किया और बाद में इनको लेकर के एक सामान्य वातावरण निर्मित किया। ऐसा ही सभी को करना योग्य है।

हिन्दू जनमानस सुधार को स्वीकार करने में तैयार रहता है और ना सिर्फ तैयार रहता है बल्कि अपने अन्दर से ही सुधारकों को पैदा करता है जोकि समय-समय पर हिन्दू धर्म में आई कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करते रहे हैं। ऐसी प्रवृत्ति सभी वर्गों में हो वह स्वागत योग्य है।

हिन्दू कोड बिल का उदाहरण हमारे समक्ष है उस समय चाहे करपात्री जी इत्यादि लोगों ने इसका विरोध किया परन्तु आज किसी भी हिन्दू से पूछिए वह दिल से स्वागत करता है इन चीजों का। क्योंकि सभी को समान

अधिकार मिले यह कौन नहीं चाहता?

इसी दृष्टिकोण से अन्य मत वाले भाई-बहनों को यह सोचना चाहिए कि यह उनकी धार्मिक मान्यताओं से सम्बन्धित बात नहीं है यह कोई उपासना पद्धति बदलने या उस पर रोक लगाने की बात नहीं है, न ही रीति रिवाजों को बदलने की। यह एक सामाजिक प्रश्न है जिनके चलते आज भी उन समुदायों में पिछड़ापन और पक्षपातपूर्ण स्थितियाँ बनी हुई हैं। ट्रिपल तलाक के द्वारा कुछ राहत मुस्लिम महिलाओं को मिली है, परन्तु अभी मंजिल बहुत दूर है और उसके लिए आवश्यक है कि समान नागरिक संहिता लाई जाए। इसका स्वागत होना चाहिए न कि विरोध। **इसको राजनीतिक चश्मे से न देखकर सामाजिक उन्नयन की दृष्टि से देखा जाना चाहिए, ऐसा हमारा विनम्र मत है।**

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती स्मृति दिवस सम्पन्न

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयुपर में दिनांक २३ जुलाई २०२३ को स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती स्मृति दिवस मनाया गया। स्मृति शेष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती को आर्य जगत् का भामाशाह कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ये विचार जनार्दन राय नागर विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंग देवोत ने आयोजित समारोह में व्यक्त किए। प्रो. सारंग देवोत ने कहा कि पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती को महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के प्रति ऐसी गहरी आस्था जगी कि उन्होंने अपने सांसारिक जगत् का त्याग कर संन्यास की दीक्षा ग्रहण की।

न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि १९९२ से पूर्व नवलखा महल राजस्थान सरकार के आबकारी विभाग का गोदाम था और पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। आर्य प्रतिनिधि सभा; राजस्थान एवं आर्य समाज के सतत् प्रयासों के पश्चात् १९९२ में राजस्थान सरकार से यह भवन आर्य समाज को प्राप्त हुआ। इसके जीर्णोद्धार के लिए उस समय स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती ने एक करोड़ रु. की धनराशि देकर इसका जीर्णोद्धार करवाया। स्वामी जी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संस्थापक अध्यक्ष थे। आज उन्हीं के द्वारा जो प्रयास किए गए उसके परिणामस्वरूप न्यास विश्व में ख्याति प्राप्त कर रहा है।

समारोह के मुख्य वक्ता आर्य जगत् के विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। उन्होंने नवलखा के सभी नवाचारों को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि न्यास के वर्तमान अध्यक्ष श्री अशोक आर्य जी एवं इनकी टीम ने नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के विभिन्न प्रकल्पों को तैयार करवाया इसके लिए ये बधाई के पात्र हैं।

अंधविश्वास निर्मूलन की सत्यता को प्रायोगिक रूप में प्रकट करने के लिए जादूगर राजतिलक ने विभिन्न करतबों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि बाबाओं के जादू कोई शक्ति नहीं है बल्कि हाथ की कला है। अतः हमें अन्धविश्वासों में नहीं पड़ना चाहिए।

इससे पूर्व समारोह में अतिथियों का स्वागत न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने किया।

इस अवसर पर मेवाड़ की कुंवरानी निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने कहा कि यहाँ की संस्कार वीथिका जैसे प्रकल्प मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने परिवार सहित पुनः आने का निश्चय प्रकट किया।

इस अवसर पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र युवा इकाई का शुभारम्भ भी किया गया। इसमें श्रीमती ऋचा पीयूष, मेधा पीयूष, प्रिया अग्रवाल, प्रशान्त अग्रवाल, संध्या मेहरा, सुकृत मेहरा, उषा राठौड़, सृष्टि राठौड़, रवीन्द्र राठौड़, दुष्यन्ता राठौड़, जयेश आर्य, विशाल राठौड़, शीतल गुप्ता, भाग्यश्री शर्मा, आदर्श गर्ग, हेमांग जोशी आदि ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का संकल्प लिया तथा इसके विकास के लिए कार्य करने का भी संकल्प लिया। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र युवा इकाई के संयोजन का दायित्व श्रीमती ऋचा पीयूष को सौंपा गया। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से श्री नवनीत आर्य के पौरोहित्य में हुआ। स्वागत न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने किया।

समारोह का संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने तथा संयोजन एवं धन्यवाद श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने किया। कार्यक्रम के पश्चात् श्री नारायन लाल मित्तल के निर्देशन में सहभोज का आयोजन हुआ।

- भंवरलाल गर्ग; कार्यालय मंत्री

फिल्म 'आदिपुरुष' की खासी आलोचना हो रही है, जिसका एक बड़ा कारण है इसमें हनुमान जी का चित्रण। फिल्म में लंका दहन से पहले एक डायलाग है, 'बत्ती तेरे बाप की, तेल तेरे बाप का, आग तेरे बाप की, तो जलेगी भी तेरे बाप की।' लोग पूछ रहे हैं कि क्या हनुमान जी इस तरह के संवाद बोल सकते हैं? ये संवाद मनोज मुंतशिर ने लिखे हैं। फिल्म में हनुमान जी के लुक को लेकर भी तरह-तरह की बातें हो रही हैं। उन्हें मुस्लिम वाली वेशभूषा दे दी गई है, सबको ऐसा लग रहा।

ऐसे में आपके मन में ये सवाल जरूर उठ रहा होगा कि हनुमान जी कैसे दिखते थे, उनका व्यवहार कैसा था?क्या हनुमान जी इसी तरह तू-तड़ाक में बात करते थे या फिर उनका व्यक्तित्व अलग था?रामकथा का प्रथम मूल स्रोत है वाल्मीकि रामायण, जिसे महाकवि वाल्मीकि ने लिखा है। वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड में सीता हरण के बाद श्रीराम और लक्ष्मण की हनुमान जी से भेंट होती है, वहाँ उनके बारे में काफी कुछ पता चल जाता है।

श्रीराम ने पहली भेंट में हनुमान जी को कैसा पाया?'वाल्मीकि रामायण' से समझिए। रामकथा जानने वालों को ये बताने की आवश्यकता नहीं है कि वानरों के राज्य में बाली और सुग्रीव नामक दो भाइयों के बीच गहरी शत्रुता थी। बाली दुष्ट और बलवान था, अतः सुग्रीव अपने कुछ सहयोगियों के साथ किष्किंधा पर्वत पर निवास करते थे। जब श्रीराम और लक्ष्मण उधर आए तो उसके मन में डर बैठ गया कि कहीं ये बाली के योद्धा तो नहीं। अतः, उसने श्री हनुमानजी को इसका पता लगाने के लिए भेजा। हनुमान जी एक विप्र का रूप धारण कर के दोनों भाइयों के समीप पहुँचे।

यहाँ वाल्मीकि जी लिखते हैं कि हनुमान जी ने मन को प्रिय लगने वाली मधुर वाणी में वार्तालाप आरम्भ किया। स्पष्ट है कि हनुमान जी परिस्थितियों के हिसाब से निर्णय लेते थे। उन्हें कहाँ क्या बोलना है और किस तरह, इसकी समझ थी। उन्होंने दोनों भाइयों के रूप और गुण की प्रशंसा करते हुए उनसे वहाँ आने का अभिप्राय पूछा। हनुमान जी ने दोनों भाइयों को बताया कि वो जैसा चाहें वैसा रूप धारण कर सकते हैं। उन्होंने खुद का परिचय सुग्रीव के मंत्री

के रूप में दिया।

सोचिए, हनुमान जी ने ऐसी-ऐसी बातें की कि रघुकुल शिरोमणि प्रसन्न हो उठे और उन्होंने फिर लक्ष्मण से चर्चा की। श्रीराम ने हनुमान जी के बारे में जो चर्चा किया, उन्होंने जो पाया, वो आपको बताते हैं। श्रीराम ने हनुमान जी को 'वाक्यज्ञ' कहा है, अर्थात् वो बातों के मर्म को समझने वाले हैं। सामने वाला क्या बोल रहा है और जवाब में क्या बोलना चाहिए, इसकी उन्हें समझ थी। श्रीराम कहते हैं कि जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया और जो सामवेद का विद्वान् नहीं, वो इस तरह बातें नहीं कर सकता।

अर्थात्, श्रीराम ने हनुमान जी की बातों से ही अंदाजा लगा लिया कि वो तीनों प्रमुख वेदों के ज्ञाता हैं।

हनुमान जी इस प्रसंग में काफी देर तक बोलते हैं। श्रीराम ने पाया कि इसके बावजूद उनके मुँह से एक भी अशुद्धि नहीं निकली। अर्थात्, उन्होंने सटीक शब्दों का प्रयोग किया, ऐसा कुछ नहीं कहा जो सामने वाले को बुरा लगे और उनका उच्चारण सटीक था। इतना ही नहीं, बोलते समय हनुमान जी के शरीर के अंगों पर भी श्रीराम की नजर थी। कोई कुछ बोल रहा है तो उसकी भाव-भंगिमा कैसी होती है, इस पर काफी कुछ निर्भर करता है। हनुमान जी की भौहें, ललाट, मुख और नेत्र के अलावा सभी अंग उनकी बातों के हिसाब से उनका साथ देते थे। यानी, सभी अंगों में और उनकी बातों में तालमेल दिखता था। कोई साधारण मनुष्य भले ही इसका अवलोकन न कर पाए, लेकिन श्रीराम ने इसे समझ लिया। भाषण की एक और कला होती है - कम से कम शब्दों में अपनी बात रखना।

श्रीराम ने लक्ष्मण से इसकी चर्चा भी की है कि कैसे संक्षिप्त शब्दों में हनुमान जी ने अपनी बात कह डाली। अर्थात्, अपनी बातों का मर्म सामने वाले के हृदय में पहुँचा दिया। उन्होंने एक भी कड़वा वचन नहीं बोला, बोलने के दौरान वो कहीं इस तरह से नहीं रुके जैसे कुछ भूल गए हैं अथवा उन्होंने कुछ गलत बोल दिया हो। न उनकी आवाज ऊँची थी, न ज्यादा धीमी वह मधुर थी। उन्होंने कुछ भी तोड़-मरोड़ कर नहीं कहा, सीधे सपाट शब्दों में अपनी बात रखी।

सोचिए, भगवान श्रीराम कितने बड़े ज्ञानी थे कि उन्होंने सामने वाले की बातों को सुन कर उसके बारे में इतना कुछ जान लिया। उससे भी ज्यादा हनुमान जी कितने बड़े चतुर विद्वान् थे कि स्वयं श्रीराम उनसे प्रभावित हो गए। नियम के हिसाब से बोली गई शुद्ध वाणी को व्याकरण में 'संस्कार' कहा गया है, शब्द उच्चारण की शास्त्रीय परिपाटी 'क्रम' कहलाती है और धाराप्रवाह बोलने वालों को 'अविलम्बित' कहा जाता है। श्रीराम को हनुमान में ये तीनों ही गुण विद्यमान दिखे।

श्रीराम तो यहाँ तक कहते हैं कि हृदय, कंठ और मूर्धा के सटीक प्रयोग से बोली गई इस वाणी से तलवार उठाए हुए शत्रु का भी हृदय परिवर्तित हो जाए। श्रीराम यहाँ सुग्रीव को भाग्यशाली मानते हैं, कि उनके पास हनुमान जैसे दूत हैं। हनुमान जी ने बातचीत के द्वारा वहीं संधि प्रस्ताव रख दिया और वो

स्वीकृत भी हो गया।

रावण के दरबार में कटु वचन सुन कर भी हित की बात बोलते रहे हनुमान जी

लंका दहन से पहले हनुमान जी और लंका के योद्धाओं के बीच भीषण युद्ध हुआ था और ब्रह्मास्त्र

का सम्मान करते हुए उन्हें मेघनाद का बंदी बनना पड़ा था, हो सकता है उस समय वो आक्रोशित भी रहे हों। लेकिन, हनुमान जी ने कटु वचन का प्रयोग किया हो, ऐसा नहीं हो मिलता। तुलसीदास कृत रामचरितमानस में भी उनके रावण के साथ बहस की चर्चा है, लेकिन वहाँ भी वो रावण को ज्ञान ही दे रहे हैं, उसे समझा रहे हैं।

उलटा होइहि कह हनुमाना।
मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना।।

रावण द्वारा हनुमान जी के लिए बार-बार अपशब्दों का प्रयोग किए जाने के बावजूद भी उन्होंने यही समझाया कि तुम्हारे मन में भ्रम है। रावण के दरबार में उन्होंने श्रीराम की महिमा का बखान किया। उन्होंने उलटी-सीधी बातें नहीं की।

जदपि कही कपि अति हित बानी।
भगति बिबेक बिरति नय सानी।।

उन्होंने शत्रु के सामने बंदी बन कर भी दुश्मन के ही हित की बात की।

हनुमान जी ने भक्ति और बुद्धि भरी बातें कीं। तुलसीदास स्पष्ट कहते हैं। रावण ने इस दौरान न सिर्फ वानर जाति, बल्कि श्रीराम के लिए भी कड़वे शब्दों का प्रयोग किया लेकिन हनुमान जी उसे समझाते रहे। आश्चर्य नहीं कि श्रीराम ने हनुमान जी को 'वाक्यज्ञ' कहा था। अतः, हनुमान जी मधुर वाणी बोलने वाले वेदज्ञ थे। उनका व्याकरण सही था। वो अपनी वाणी से सामने वाले को प्रभावित कर देते थे। धाराप्रवाह बोलते थे, लेकिन कटु नहीं।

- अनुपम कुमार सिंह
चम्पारण (बिहार)

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

अद्भुत, चिरस्मरणीय अनोखा ज्ञान जो यहाँ आने से प्राप्त हुआ। ये स्थान भारतीय संस्कृति के ज्ञान का खजाना है एवं जीने की कला सिखाती है, ये अनुभव प्राप्त हुआ है। भारतीय दार्शनिक महापुरुषों, सन्त, महात्माओं, ऋषियों, विद्वानों, देशभक्तों ने भारतीय संस्कृति ज्ञान को आगे बढ़ाया जो हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। - संजय सिंह फौजदार

आज मैं नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र पर आया। यहाँ मुझे बहुत ही अच्छा लगा। यहाँ जो देखने की चीजें हैं और कहीं पर नहीं मिल सकता। स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे महान् पुरुष की जीवनी बताई। १६ संस्कार जो और कहीं देखने को नहीं मिलते बताए गए एवं ३डी थियेटर व आर्ट गैलेरी में जो गाइड है उन्होंने बहुत विस्तार से समझाया। इस ३०रु. के टिकट में मैंने बहुत शिक्षाएँ ले ली। मेरे अनुसार इसका टिकट बढ़ाकर ३०० रु. करना चाहिए।

- संजय शर्मा; मुम्बई

आज मैं उदयपुर के उस स्थान पर आया हूँ जहाँ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। मैं अपने आपको बहुत ही सौभाग्यशाली मान रहा हूँ कि मुझे इस केन्द्र पर आने का मौका मिला। ज्ञानवर्द्धक, उच्चतम क्वालिटि की बहुत अच्छी प्रदर्शनी। यहाँ पर जो आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में गाइड हैं उनको बहुत धन्यवाद हमें बिल्कुल इस प्रकार से समझाया कि हमें महसूस हो रहा था जैसे हम फिल्म देख रहे हों आनन्द आ गया। - दिलीप पटेल

स्वराज्य और वेद

भारत स्वतन्त्र हो गया है। जैसी स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उसके लिए बहुत बड़ा शुल्क देना पड़ा है। असंख्यात जन शूली पर चढ़े हैं, जेलों में सड़े हैं, गोलियाँ खाई हैं। कई ग्रामों का चिह्न तक मिटा दिया गया। स्वतन्त्रता देवी सचमुच बहुत बड़ी बलि लिया करती है। स्वतन्त्रता मिली, किन्तु भारत अखण्डित न रहा। भारत का बहुत बड़ा भू-भाग भारत के अंग से काट दिया गया। लाखों निरीह निर्दोष मनुष्य, बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष किसी अपराध के बिना मौत के घाट उतार दिये गये। यह क्यों हुआ? आज इसकी विवेचना करना उपयुक्त नहीं है। भावी तटस्थ ऐतिहासिक कदाचित् इसका विश्लेषण कर सकें। किन्तु इस बात के कहने में कुछ दोष नहीं कि लगभग एक सहस्र वर्ष से हम एक भयंकर भूल करते आ रहे थे, उसका यह परिणाम हुआ है।

यदि वर्तमान काल में भारत से पृथक् किया गया भू-भाग वापिस न लिया जा सका, तो आगे आने वाली सन्तान भारत के इस स्वरूप को भूल जाएगी, इस खण्डित देश को ही भारत मान लेगी। उसे यह कभी पता ही नहीं चलेगा कि भारत इससे कहीं बहुत बड़ा था। जैसे आज के साधारण भारतीय को यह ज्ञात नहीं कि आज से सहस्रों वर्ष पूर्व भारत बहुत अधिक विस्तृत था।

रामायण और महाभारत के आलोचन से ज्ञात होता है कि वर्त्तमान ईरान तथा अफगानिस्तान भारत के भाग थे। अरब वालों से भारतीयों के विवाहादि सम्बन्ध होते थे। मिश्र तथा अरब के सम्राट् वाणासुर (वनिपाल असुर) की कन्या उषा का विवाह सम्बन्ध महाभारत युद्ध के विख्यात् वीर अर्जुन के सारथि भगवान कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध से हुआ था।

पौराणिक काल में हमारे भारत की पश्चिमोत्तरी सीमा कश्यप सागर Caspian Sea के पश्चिम तटवर्ती बाकूनगर तक अवश्य थी। ज्वालामुखी देवी का पुरातन मन्दिर वहाँ है, उसमें संस्कृत शिलालेख विद्यमान हैं। सन् १६१४ ई. विक्रम संवत् १६७१ तक वहाँ भारतीय पुजारी भी रहता था, वह मुलतान जिले का निवासी था। वह ज्वालामुखी 'बड़ी माई' कहलाती थी और कांगड़ा वाली छोटी माई कहलाती थी। आज यह बात प्रायः सब को विस्मृत हो चुकी है। हमारे प्रमाद के कारण हम समय-समय पर धकेले जाते रहे, आज हमें एक और धक्का लगा है और हम कहाँ आ पहुँचे हैं? बलोचिस्तान की हिंगलाज देवी, पेशावर की पंचतीर्थी, बन्नू जिले के भरत तथा कैकेयी ग्राम, मुलतान की नृसिंहपुरी, शाहपुर जिला का नरसिंह फोहार, जेहलम जिले का कटास (कटाक्ष) राजतीर्थ, रावलपिंडी जिला के चोहाभक्तां, थोहाखालसा तीर्थ आदि आदि पुण्य स्थान विस्मृति के गर्त में निगीर्ण हो जाएँगे। यह भूलना शुभ नहीं है। अस्तु।

भारत की पराधीनता पर इस काल के ज्ञात इतिहास में जिस व्यक्ति ने सब से प्रथम शोकाश्रु बहाये हैं, हृदय की वेदना का परिचय दिया है, वह एक संसार त्यागी वीतराग योगी था। विक्रम की उन्नीसवीं शती में उस जैसा सुधारक भारत क्या अन्यत्र भी नहीं दीखता। अंग्रेजों के प्रचण्ड आतंक से जब आतंकित

होकर भारतीय मूक हो रहे थे, उस विकट समय में उस महामनुष्य ने 'स्वदेशी राज्य' को सर्वोत्तम घोषित किया। उसके पुनीत शब्द इस प्रकार हैं-

'अब अभाग्योदय से और आर्य्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा का क्या कहना, किन्तु आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो विदेशियों के पादाक्रान्त हो

रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं होता। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का छूटना दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।' (स. प्र. अष्टम समुल्लास)

पराधीनता पर कितना खेद प्रकट किया है। विदेशी राज्य की अनुपयोगिता किस मार्मिक रीति से घोषित की है। स्वराज्य का महत्त्व कितने भव्य शब्दों में आविष्कृत किया है। यह स्मरण रखना चाहिए कि कांग्रेस का तब जन्म भी नहीं हुआ था।

जिस महामनुष्य ने भारतीयों को इस युग में स्वराज्य का नाद सुनाया, उसी महात्मा ने अपने दीर्घ तप, विशाल अनुभव, और विस्तृत अध्ययन के आधार पर भारतीय जनता को विशेष रूप से और अन्यों को सामान्य रूप से बताया कि वेदों की ओर चलो।

आज का विकासवादी भी मानव समाज का हितकर कोई ऐसा सिद्धान्त प्रस्तुत न कर सका, जिसका वेद में उल्लेख न हो। भारतीय परम्परा के अनुसार 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक' के माना जाता है। अतः उस महर्षि ने वेदाभ्यास पर बहुत अधिक बल दिया।

यहाँ उस महामनुष्य के महनीय महोपकारों के परिगणन की आवश्यकता नहीं है, किन्तु उसके एक अतीव उपयोगी महोपकार की चर्चा करने के लोभ को हम संवरण नहीं कर सकते। महाराज के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने से पूर्व एक भारतीय महापुरुष की प्रेरणा पर अंग्रेज शासकों ने एक ऐसी योजना का आयोजन कर उसे कार्य में परिणत करना आरम्भ कर दिया था, जिससे भारतीय अपने अतीत गौरवपूर्ण इतिहास को भूल जाएँ।

दयानन्द प्रथम महामनुष्य हैं जिन्होंने भारतीयों में जातीय गौरव को जगाया। इनके अन्दर पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा के कारण उत्पन्न हुई हीनभावना को भगाया, और अपने पूर्वजों, अपनी सभ्यता, तथा संस्कृति पर गर्व करना सिखा कर जातीय गौरव की अनुभूति सिखाई। दयानन्द यदि और कुछ न करते, केवल यही कार्य कर जाते तो भी आने वाली सन्तान के कल्याण के लिए यह पर्याप्त था। किन्तु दयानन्द ने इससे अधिक वेद की ओर चलने का आदेश करके यह बताया कि तुम उच्छिष्ट सेवी मत बनो। अपने दृष्टिकोण से सभी वस्तुओं और घटनाओं को देखो, विचारो और अपने दृष्टिकोण तथा अपनी सभ्यता संस्कृति की कसौटी के द्वारा उनका मूल्य आंकों। यह इतनी बड़ी देन है कि जिसकी समता और कोई वस्तु नहीं कर सकती।

दयानन्द जब तक जिए, इस कसौटी पर सबको कसते रहे और इसी के अनुसार चलने का उपदेश करते रहे। वे प्रत्येक समस्या का समाधान वेद से प्राप्त करते थे ।

आज जब देश स्वतन्त्र हो गया है तब उस स्वतन्त्रता की रक्षा की विकट समस्या उपस्थित है। स्वतन्त्रता का प्राप्त करना इतना कठिन नहीं जितना कि उसकी रक्षा करना। वेद में स्वराज्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड का प्रथम सूक्त राष्ट्र सूक्त या स्वराज्य सूक्त है। वेद में अध्यात्म प्रकरण से उतरकर दूसरा स्थान राष्ट्र का है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का अस्सीवाँ सूक्त स्वराज्य सूक्त है, उसके प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आता है- 'अर्चन्ननु स्वराज्यम्।' इस प्रकार चारों वेदों में स्थान-स्थान पर राष्ट्र की बहुत चर्चा है। स्वराज्य के सम्बन्ध का एक मन्त्र यहाँ देना अप्रासंगिक न होगा।

ओ ३ म् आ यद्वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरय: ।
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये खराज्ये यतेमहि स्वराज्ये ।।

- ऋग्वेद ५/६६/६

विशाल दृष्टि वाले परस्पर स्नेह सूत्र से आबद्ध भद्र मनुष्यो! आर्यों! तुम और हम सब मिलकर विशाल तथा अनेकों संरक्षणीय स्वराज्य के निमित्त यत्न करें। स्वराज्य को विशाल तथा बहुपाय्य कहा है। बहुपाय्य शब्द मनन करने योग्य है। स्वराज्य की रक्षा किसी एक की साध्य नहीं है इसके लिए तो राष्ट्र के सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य है। कोई एक टोली चाहे वह कैसी ही शक्तिशालिनी क्यों न हो, स्वराज्य तथा स्वतन्त्रता की रक्षा नहीं कर सकती। राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर राष्ट्र के प्रति स्वत्व तथा ममत्व का भाव उत्पन्न करके उनका सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

अब जब कि स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है यह आवश्यक है कि हम अपनी पुरानी मर्यादाओं का अवलोकन और आलोचन करें कि क्या वे इस समय भी उपयुक्त हैं या नहीं। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है वेद में राजनीति प्रकरण बहुत विस्तृत है। हम यहाँ दो एक विषयों के सम्बन्ध में वैदिक निर्देश देना चाहते हैं। सबसे प्रथम राजा के सम्बन्ध में लीजिए। वेद राजा का प्रजा द्वारा चुनना विहित करता है। यथा-

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमा: प्रदिश: पंच देवी:।।

- अथर्ववेद ३/४/२

तुझे ये व्यवहार कुशल समस्त प्रदेशों में रहने वाली प्रजाएँ राज्य के लिए चुनें।

चुनाव के साथ संकेत से चुनने वालों का निर्देश भी कर दिया गया है। समस्त प्रजा को चुनने का अधिकार वेद दे रहा है, जो कदाचित् संसार में कहीं नहीं है। चुनने वालों का थोड़ा सा परिगणन भी वेद ने कर दिया है-

ये धीवानो रथकारा: कर्मारा ये मनीषिण:।
उपस्तीन्पर्ण मह्यं त्वं सर्वान्कृण्वभितो जनान् ।।

- अथर्ववेद ३/५/६

ये राजानो राजकृत: सूता ग्रामण्यश्च ये ।
उपस्तीन्पर्ण मह्यं त्वं सर्वान्कृण्वभितो जनान्।।

- अथर्ववेद ३/५/७

जो **धीवान्**= धीवर, रथकार, **कर्मार**= शिल्पी लोहकार आदि **मनीषी**= बुद्धिमान, अर्थात् अपनी बुद्धि से कार्य करने वाले है, अपनी मति का उपयोग करना जानते हैं, जो राजा-सामन्त, **राजकृत**= राजा को बनाने वाले, **सूत**= गाथाएँ कहने वाले तथा **ग्रामणी**= समुदायों के नेता है, हे पर्ण! उन सबको मेरे चारों और उपस्थित रहने वाला बनाओ।

इन मन्त्रों से प्रतीत होता है कि राजा के चुनाव में सभी का अधिकार है। 'ग्रामणी' पद एक विशेष संकेत करता प्रतीत होता है। इस पद से ऐसा प्रतिभासित होता है कि पहले प्रत्येक व्यवसाय-संघ अपना-अपना मुखिया चुनता है, और वे मुखिया फिर राजा को चुनते हैं। मन्त्रों में आया **'मनीषिण:'** पद भी बहुत महत्त्व का है। 'मनीषी' का अर्थ है अपनी मनीषा=मनसा का स्वामी। अर्थात् जो अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य कर सकता हो, पर प्रत्ययनेय बुद्धि न हो, दूसरों के बहकावे में आने वाला न हो। अथर्ववेद ३/४ में चुनाव में भाग लेने वालों का परिगणन करके अन्त में कहा है-

तास्त्वा सर्वा: संविदाना ह्वयन्तु।

वे सारी प्रजाएँ एक मत करके, एकमत होकर तुझे चाहें। राज्याभिषेक करते समय पुरोहितादि प्रजा के

प्रतिनिधि अमात्यवर्ग से कहते हैं-

इमं देवाऽअसपत्नंᳫसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रियेन्द्रियाय।।

– यजुर्वेद ६/४०

हे राजनीति-व्यवहार कुशल महामनुष्यो! इस चुने जाते हुए राजा को शत्रुरहित बनाकर महान् क्षत्र, महान् उत्कर्ष, महान् जानराज्य-जनता के राज्य, तथा राजैश्वर्य्य के लिए प्रेरित करो।

इसमें जानराज्य शब्द विचारने योग्य है। जानराज्य का अर्थ है जनता का राज्य-जनतन्त्र।

इस से स्पष्ट सिद्ध है कि वेद स्वेच्छाचारी, निरंकुश शासन का प्रतिपादक नहीं है। वेद तो जानराज्य = जनता के राज्य का पक्षपाती हैं। **क्रमशः....**

– स्वामी वेदानन्द तीर्थ
(राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन)

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र (NMCC) एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से श्रावणी पर्व एवं रक्षा बन्धन के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य अध्यक्ष-न्यास	भवानीदास आर्य मंत्री-न्यास	डॉ. अमृत लाल तापड़िया संयुक्तमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी।अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती को वेदविषयक ज्ञान कैसे हुआ?

स्वामी दयानन्द सरस्वती के समय वेदविषयक प्रचलित मान्यता के परिप्रेक्ष्य में यह जानना आवश्यक है कि उन्होंने वेदों का जो स्वरूप जनता एवं विद्वानों के समक्ष उपस्थित किया, उसका परिज्ञान उन्हें कहाँ से और कैसे प्राप्त हुआ? बाल्यावस्था में उन्होंने घर में केवल शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता कण्ठस्थ की थी। यह बात उन्होंने स्वयं लिखित एवं कथित आत्मवृत्त में कही है। इससे अन्यत्र गृह-परित्याग के पश्चात् भी एक-दो स्थानों पर वेद पढ़ने का संकेत किया है, परन्तु उससे हम किसी विशेष परिणाम पर नहीं पहुँच सकते।

गुरुवर स्वामी विरजानन्द सरस्वती से उन्होंने केवल पाणिनीय व्याकरण शास्त्र का ही अध्ययन किया था। इससे अधिक उनके जीवन चरितों से कुछ नहीं जाना जाता। श्री स्वामी विरजानन्द सरस्वती की प्रसिद्धि भी केवल वैयाकरण रूप में ही थी। हाँ, उन्हें जीवन के अन्तिम भाग में आर्षग्रन्थों और अनार्ष ग्रन्थों के मौलिक भेद का परिज्ञान हो गया था। इसलिये उन्होंने सिद्धान्त कौमुदी शेखर मनोरमा आदि का पठन-पाठन बन्द करके अष्टाध्यायी महाभाष्य का पठन-पाठन प्रारम्भ कर दिया था। इसी काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती अध्ययन के लिये उनके चरणों में उपस्थित हुए थे और गुरुमुख से महाभाष्यान्त पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन किया था। इसलिये स्वामी दयानन्द सरस्वती के हृदय में आर्षग्रन्थों के प्रति जो असीम श्रद्धा और मानुषग्रन्थों के प्रति जो प्रतिक्रिया देखने में आती है, उसका उत्स स्वामी विरजानन्द सरस्वती की शिक्षा में ही मूलरूप से निहित है, परन्तु इसके विशदीकरण में स्वामी दयानन्द सरस्वती का अपना प्रमुख योगदान रहा है। उन्होंने अपने जीवन में सहस्रों ग्रन्थों का अध्ययन मनन और परीक्षण के अनन्तर भ्रमोच्छेदन में लिखा है कि मैं लगभग तीन सहस्र ग्रन्थों को प्रामाणिक मानता हूँ।

यह सब कुछ होने पर भी स्वामी दयानन्द सरस्वती को वेद के उस स्वरूप का परिज्ञान कहाँ से हुआ, जिसे वे ताल ठोककर सबके सम्मुख उपस्थित करते थे, यह जिज्ञासा का विषय बना ही रहता है।

मैं इस गुत्थी को सुलझाने के लिये वर्षों से प्रयत्नशील रहा हूँ, क्योंकि मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती की देश जाति और समाज को उक्त वेद-विषयक देन सर्वोपरि है और इसी में निहित है उनके वेदोद्धार के कार्य की महत्ता एवं विलक्षणता।

मैं अपने अल्पज्ञान एवं अल्प स्वाध्याय से इस विषय में इतना तो अवश्य समझ पाया हूँ कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जब विशाल संस्कृत वाङ्मय का आलोडन किया, तब उन्हें यह तत्त्व तो अवश्य ज्ञात हो गया होगा कि संस्कृत वाङ्मय के विविध विद्याओं के आकर ग्रन्थ स्व-स्वविद्या का उद्गम वेद से ही वर्णित करते हैं। [द्र.-वैदिकसिद्धान्तमीमांसा में छपा 'वेदानां महत्त्वं तत्प्रवारोपायाश्च' संस्क.२ पृष्ठ १-१० (संस्कृत), पृष्ठ ३३-३७ (हिन्दी)।]

अतः वेद में उन समस्त विद्याओं का मूलरूप से वर्णन होना ही चाहिये। स्वायम्भुव मनुप्रोक्त आद्य समाज शास्त्ररूप मनुस्मृति में समस्त मानव समाज के वेदोदित कर्तव्याकर्तव्य का विधान किया है और भूत भव्य तथा वर्तमान में उत्पन्न हुई या उत्पन्न होनेवाली समस्त समस्याओं का समाधान वेद ही कर सकता है, 'भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिद्ध्यति।' (मनु. १२/९७) तथा इसी अध्याय के श्लोक ९८, ९९, १००, में ऐसा

उल्लेख मिलता है।

इससे सम्पूर्ण मनुष्य व्यवहारोपयोगी कार्यों की समस्त समस्याओं का समाधान वेद कर सकता है, का बोध भी हो गया होगा, परन्तु शब्दप्रमाण से विज्ञात वेद का स्वरूप वैसा ही है या नहीं, इसके निश्चय के लिये प्रमाणान्तर की अपेक्षा भी रहती ही है। इसका कारण यह है कि शास्त्रकारों का लेख वेद के प्रति अतिशय श्रद्धा के कारण अथवा स्वप्रतिपाद्य विषय की प्रामाणिकता दर्शाने के लिये भी हो सकता है।

अतः मेरी क्षुद्र बुद्धि में स्वामी दयानन्द सरस्वती को वेद का जो स्वरूप ज्ञात हुआ, उसका स्रोत कहीं बाहर नहीं, अपितु तत्स्थ (उनके भीतर) ही होना चाहिये। क्योंकि ऊपर जिन शास्त्रों के आधार पर वेद के विशिष्ट स्वरूप की कल्पना की जा सकती है, वे शास्त्र तो शंकराचार्य और भट्टकुमारिल के समय न केवल विद्यमान थे अपितु वर्तमान काल की अपेक्षा अधिक पढ़े-पढ़ाये जाते थे।

स्वामी शंकराचार्य प्रस्थानत्रयी (वेदान्त-उपनिषद्-गीता) तक ही सीमित रह गये, उन्होंने वेद के सम्बन्ध में न कुछ लिखा और न कहीं विचार ही प्रस्तुत किया। भट्टकुमारिल वैदिक कर्मकाण्ड में ही यावज्जीवन उलझे रहे।

मैं इस विषय में जो समझ पाया हूँ, वह इस प्रकार है-

१. वेद के स्व शब्दों में

'उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासा'

(ऋग्वेद १०/७१/४)

कोई एक ऐसा वेदविद्या का अधिकारी पुरुष होता है, जिसके सम्मुख वेदवाक् स्वयं अपने स्वरूप को उसी प्रकार प्रकट कर देती है जैसे ऋतुकाल में पति की कामना करती हुई अच्छे वस्त्र पहने हुई पत्नी स्वपति के सम्मुख गोपनीयतम अंगों को भी उद्घाटित कर देती है।

२. जिस अधिकारी पुरुष के प्रति वेदवाक स्वयं अपना स्वरूप उद्घाटित करती है, वह कौन हो सकता है? इस विषय में शास्त्रकार कहते हैं -

'न ह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा।'

अर्थात् वेद का प्रत्यक्ष उन्हीं को होता है, जो ऋषि और तपस्वी होते हैं।

३. ऐसे ऋषिभूत एवं तपस्वी को वेद की प्राप्ति के लिये इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता। वेदवाक् स्वयं उस हृदय में उपस्थित होकर अपने रहस्यों को उद्घाटित कर देती है।

अजान्ह वै पृश्नीस्तपस्यमानान्ब्रह्म स्वयंभ्वभ्यानर्षत त ऋषयोऽभवन्त श्षीणामृषित्वम्।

- तैत्तिरीय आरण्यक २६

तद्यदेनांस्तपस्यमानान् ऋषीन् ब्रह्म स्वयमभ्यानर्षत। त ऋषयोऽभवन् तद् ऋषीणामृषित्वम्। - निरुक्त २/२१

इसका भाव यह है कि जो ऋषिभूत व्यक्ति यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिये तपस्या करते हैं, उन्हें ब्रह्म (=वेद) स्वयं प्राप्त होता है। यही ऋषियों का ऋषित्व है।

१. स्वामी दयानन्द को सर्वविध विपरीत परिस्थितियों में वेद के यथार्थ स्वरूप का बोध कैसे हुआ? इस विषय में मेरे मन में वर्षों से शंका बनी हुई थी। गतमास (८-१७ अगस्त १९९०) नर्मदा तीरस्थ अपनी बाल लीला स्थली माहिष्मती (महेश्वर) की यात्रा के प्रसंग में जब मैं आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर में ठहरा हुआ था, तब अचानक ११ अगस्त की रात्रि में यह ब्राह्मण वचन स्मृति पटल पर उभरा और मेरी वर्षों की शंका का समाधान हो गया।

निरुक्त के उक्त वचन की व्याख्या में दुर्गाचार्य लिखता है-

यद्यस्मादेनांस्तपस्यमानांस्तप्यमानान्ब्रह्म ऋग्यजुः सामाख्यं स्वयम्भु अकृतकमभ्यागच्छत्।,
अनधीतमेव तत्त्वतो ददृशुस्तपो विशेषेण।
यद्वाऽदर्शयदास्मानमित्यर्थोऽत्र विवक्षितः।

- निरुक्त श्लोकवार्तिक २/३/५६ पृष्ठ ३१४

२. वेंकटेश्वर प्रेस में छपे निरुक्त में शिवदत्त दाधिमथ ने लिखा है 'आविर्भूतमित्यर्थः', भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता (१७/१४-१६) में कायिक वाचिक एवं मानसिक त्रिविध तपों का वर्णन किया है। ये विविध तप निश्चय ही मानव जीवन को उन्नत बनाने हारे हैं परन्तु वेदज्ञान की प्राप्ति के साक्षात् प्रयोजक नहीं हैं।

निश्चय ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गृह-त्याग के पश्चात् योग की प्राप्ति एवं सच्चे शिव के दर्शन के लिये कठोर कायिक वाचिक एवं मानसिक तपों से अपने शरीर वचन और मन को कुन्दन बना लिया था, द्वन्द्वातीत अवस्था को प्राप्त कर लिया था, परन्तु सद्गुरु अथवा यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिये वे वर्षों बीहड़ वनों, हिमाच्छादित पर्वतों, उनकी कन्दराओं तथा गंगा एवं नर्मदा, के तटों पर वर्षों भ्रमण करते रहे। नर्मदा के तट पर ही उन्हें स्वामी विरजानन्द जैसे सद्गुरु का परिचय

प्राप्त हुआ। वहाँ से उन्होंने मथुरा पाकर स्वामी विरजानन्द सरस्वती से पाणिनीय व्याकरण का अध्ययन किया, आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों की भेदक कुंजी प्राप्त की, परन्तु हम उन्हें संवत् १६२४ के हरिद्वार के कुम्भ के पश्चात् पुनः सर्वविध परिग्रह से रहित केवल लंगोटी वस्त्रधारी के रूप में गंगा तट पर विचरते एवं तपस्या करते हुए देखते हैं। यह विचरण निधूत अवस्था में लगभग ८ वर्ष रहा।

३. भारतीय परम्परा में प्रसिद्धि है कि ज्ञान की प्राप्ति के लिये गंगा की और मोक्ष की प्राप्ति के लिये नर्मदा की परिक्रमा करनी चाहिये।

इसी निधूत अवस्था में विचरण करते हुए, उन्हें विविध शास्त्रों का अवलोकन एवं स्वाध्याय करते हुए भी पाते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती में यह स्वाध्याय की प्रवृत्ति हमें उनके जीवन के अन्त तक देखने को मिलती है। यद्यपि जीवन चरितों में इस विषय में विशेष उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु यत्र-तत्र स्फुट प्रसंग जीवन-चरितों में अवश्य उपलब्ध होते हैं। यथा-

बनेडा यात्रा (१ अक्टू. से १५ अक्टू. १८८१) में राजकीय पुस्तकालय से निघण्टु के पाठ मिलाने अथर्व के मन्त्रों पर स्वर लगाने आदि का वर्णन मिलता है। द्र. - लेखरामजी कृत ऋ. द. स. जीवन चरित, हिन्दी पृष्ठ ५६१ (प्रथम संस्करण)।

हमारी दृष्टि में स्वाध्याय ही एक ऐसा तप है, जो वेद के ज्ञान विज्ञान की प्राप्ति में साक्षात् संबद्ध हो सकता है। वैदिक वांगमय में स्वाध्याय शब्द वेद के अध्ययन का वाचक है, ऐसा सभी विद्वान् मानते हैं। प्रतिपक्ष, में प्रवचन शब्द का प्रयोग होने से स्वाध्याय का अर्थ है स्वयं वेद का अध्ययन।

४.स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।
-तै.आ. ७/११/१

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। - तै. आ. ६/७

आदि वचनों में ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य ने शतपथ में अर्थात् स्वाध्याय प्रशंसा के प्रकरण में स्वाध्याय को परम तप कहा है। उन्होंने लिखा है -

यदि ह वाऽभ्यलङ्कृतः सुखे शयने शयानः स्वाध्यायमधीते आ हैव नखान्यस्तपस्तप्यते य एवं विद्वान् स्वाध्यायमधीते। - शत. ११/५/१/४

अर्थात् जो व्यक्ति चन्दन माला आदि से अलंकृत होकर गुदगुदे बिस्तर पर लेटा हुआ भी स्वाध्याय करता है, वह पैर के नख के अग्र भाग तक तप करता है।

इससे स्पष्ट है कि समस्त सांसारिक विषयों से वृत्तियों को रोककर अपने को वेदाध्ययन में ही प्रवृत्त रखना सबसे महान् एवं क्लिष्टतम तप है।

तैत्तिरीय आरण्यक ७/६ में ऋत, सत्य, तप, शम, दम आदि सभी के साथ स्वाध्याय और प्रवचन का निर्देश होने से जहाँ ऋत् सत्य आदि धर्मों के पालन की अपेक्षा स्वाध्याय-प्रवचन की महत्ता जानी जाती है, वहाँ इसकी अवश्य कर्तव्यता का निर्देश भी किया है । इस प्रकरण के अन्त में नाक मौद्गल्य के मत का निर्देश इस प्रकार किया है -

स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः।
तद्धि तपः तद्धि तपः।

अर्थात् मुद्गल पुत्र नाक महर्षि का मत है कि स्वाध्याय और प्रवचन ही तप है। वही तप है, वही तप है।

स्वाध्याय की सिद्धि होने पर ही वेदवाक् स्वयं अपने रूप को प्रकट करती है। पातंजल योगशास्त्र में स्वाध्याय की सिद्धि होने का फल इस प्रकार दर्शाया है -

स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः।

स्वाध्याय से इष्ट देवता विषय के साथ स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति का सम्बन्ध उत्पन्न हो जाता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे परम वैराग्य सम्पन्न द्वन्द्वातीत तपस्वी का प्रथम लक्ष्य तो वेद का वास्तविक स्वरूप जानना ही था। वह उन्हें स्वाध्यायरूप परम तप से प्राप्त हुआ यह मानना ही उचित प्रतीत होता है। जब मुझे इस तथ्य का आभास हुआ, स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति मेरी आस्था अत्यधिक बढ़ गई।

लेखक - पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक जी
(पुस्तक - मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका कार्य)
प्रस्तुति- 'अवत्सार'

ले लो ले लो दुआएँ माँ बाप की! सिर से उतरेगी गठरी पाप की..

दुनिया में माँ-बाप का दर्जा परमात्मा से भी ऊपर होता है। माँ-बाप की वजह से हम पैदा हुए, हमारी परवरिश हुई, पढ़ाई-लिखाई, अच्छे संस्कार, जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन, दुनिया के साथ पहचान, नौकरी, कारोबार तथा घर परिवार मिला। माँ-बाप ने अपना आज इसलिए निछावर कर दिया ताकि उनके बच्चों का कल सुरक्षित तथा बेहतर हो। माँ-बाप का कर्ज कोई भी आदमी सब कुछ करके भी नहीं चुका सकता। बच्चा बीमार हो जाए, माँ-बाप की सांस फूल जाती है, वो रातों-रात जागते रहते हैं, एक के बाद एक डाक्टर, वैद्य और हकीम के पास इलाज करवाने के लिए जाते हैं, मन्नतें, मुरादें माँगते हैं, तीर्थ स्थानों पर जाकर माथा रगड़ते हैं और तब तक चैन से नहीं बैठते जब तक बच्चा ठीक ना हो जाए। माँ-बाप खुद बढ़िया कपड़े नहीं पहनते, अच्छा खाना नहीं खाते, एक-एक पैसा बचाते हैं ताकि उनके बच्चों को कोई दिक्कत ना हो। असल में माँ-बाप ही बच्चों के असली हीरो होते हैं। बेशक आज के युवा लोग फिल्मों में काम करने वाले फिल्मी हीरो को ही अपना आदर्श मानकर उसी तरह वेशभूषा पहनते हैं, बातचीत करते हैं, व्यवहार करते हैं। लेकिन असल मे ये फिल्मी हीरो युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट कर रहे हैं, कामवासना की दलदल में फंसा रहे हैं, चोरी-डकैती, झूठ बोलना, नशीले पदार्थों का प्रयोग करना आदि आपराधिक गतिविधियों में धकेल रहे हैं। नकली जिन्दगी व्यतीत करने वाले ऐसे बड़े पर्दे या छोटे पर्दे के हीरो हमारे नवयुवकों के हीरो कैसे हो सकते हैं? हमारे सुपर हीरो तो हमारे माता-पिता हैं। मरते दम तक माता-पिता बच्चों का भला चाहते हैं। उन्हें सद्मार्ग पर लाते हैं, परिश्रम तथा ईमानदारी के द्वारा जीवन में तरक्की करने का पाठ पढ़ाते हैं।

परिवार में रहकर बच्चों को अपने माता-पिता से बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होता है जो किसी स्कूल, कॉलेज या यूनिवर्सिटी से सीखने को नहीं मिलता। और आजकल शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाने वाले शिक्षक अपने विद्यार्थियों का आदर्श भी कहाँ रहे हैं? अगर आदर्श थे और आदर्श हैं और आदर्श होंगे तो हमारे माता-पिता ही होंगे। फिल्मी हीरो आज की युवा पीढ़ी के नहीं हो सकते क्योंकि पर्दे के पीछे अनैतिक कार्य करते हैं, नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं, एक दूसरे के खिलाफ षड्यंत्र करते हैं, उनके अपने घर बार में सुख-शान्ति नहीं होती, परस्त्री गमन करते हैं और उनका वास्तविक चरित्र कोई समझ ही नहीं पाता। इन सब बातों को देखते हुए हमें अपने माता-पिता के अलावा सच्चा और असली हीरो और कोई दिखाई भी नहीं देता। माता-पिता आदर्श चरित्र वाले, ईमानदार, परिश्रमी, त्यागी, संयम वाले, समर्पित भावना वाले तथा अपने साधनों में ही गुजारा करने वाले होते हैं। किसी तीर्थ स्थान पर जाओ या ना जाओ, किसी सत्संग में जाकर भजन करो या ना करो, माता के जगराते करो या ना करो, किसी धार्मिक ग्रन्थ का नियमित अध्ययन करो या ना करो, दान पुण्य करो या ना करो, लेकिन अगर इस सारे के बदले में आपने

बुढ़ापे में मां बाप की सेवा कर दी, उन्हें उचित मान सम्मान दे दिया, अपनी पत्नी और बच्चों को उनका ध्यान रखने और उनकी सेवा करने के काम में लगा दिया तो समझ लो कि आपने स्वर्ग धरती पर उतार दिया। ऊपर कोई स्वर्ग है या नहीं है, इस बात का तो पता नहीं लेकिन अगर आपने माँ-बाप को अपनी सेवा और विनम्रता से जीत लिया तो समझो स्वर्ग आपके घर में ही आ गया है। माता-पिता की सेवा करने के महत्व को हम सब जानते तो भली-भाँति हैं लेकिन अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करते-करते हम इतने जोरू के गुलाम बन जाते हैं कि अपने माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं। आपने इंसाफ की देवी को आँख पर पट्टी बाँधे इंसाफ के तराजू को लिए देखा होगा जो कि दोनों पलड़ों को समान रखती है। ठीक इसी तरह हम नवयुवकों को अपने परिवार और अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य और निष्ठा को संतुलित करके रखना है। हम यह अच्छी तरह समझते तो हैं कि ऐसा करना कठिन है। क्योंकि अगर माँ-बाप की सेवा करें तो पत्नी नाराज और अगर अपने परिवार की तरफ ध्यान दे तो माता-पिता नाराज। लेकिन अगर आप समझदारी से व्यवहार करें तो दोनों पक्षों को सन्तुष्ट करके घर में सुख-शान्ति बनाने की कोशिश कर सकते हैं। बुढ़ापे में माँ-बाप को रहने के लिए सम्मानजनक स्थान मिल जाए, समय पर उनको भोजन मिल जाए, घर के मामलों में उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया जाए, घर के बच्चे उनके साथ समय बताएँ, व्यस्तता के बावजूद बेटा और बहू कुछ समय उनके साथ बिताएँ, बीमार होने पर उन्हें दवा दारू मिल जाए, घर में अगर कोई रिश्तेदार आए तो उनको मिलने के लिए जाए आदि-आदि बातों के अलावा माँ-बाप को और कुछ नहीं चाहिए। आपको एक पुरानी फिल्म का गाना तो याद होगा ही... ले लो ले लो, दुआएँ माँ-बाप की! सिर से उतरेगी गठरी पाप की..... आज भी प्रासंगिक है। मैं समझता हूँ कि जो नवयुवक लड़की को ब्याह कर अपने घर लाया है उसके प्रति उसकी जिम्मेदारी है, बच्चों की जरूरतें भी पूरी करनी चाहिए, लेकिन इस सारे के बावजूद भी माँ-बाप तथा अपने परिवार के प्रति देखभाल में संतुलन बनाकर रखना ही समझदारी है। जब कभी भी बेटा कोई गलती करता है तो माँ-बाप उसमें सुधार के लिए उसको समझाते हैं। जब कभी भी बेटा माँ-बाप के साथ गुस्से होता है या अपमान करता है तो क्षमा याचना करने पर माँ-बाप उसे माफ कर देते हैं और सब कुछ भूल जाते हैं। पिता अपने बेटे के लिए बचपन में घोड़ा बनकर घुमाता है और कंधे पर बिठाकर दुनिया की सैर कराता है, जब कभी भी बेटा जिन्दगी में बड़ी सफलता प्राप्त करता है तो माँ-बाप और गुरु को छोड़कर और किसी को ज्यादा खुशी नहीं होती। माँ का हृदय बहुत कोमल होता है परन्तु पिता का हृदय कुछ सख्त होता है। अगर पिता किसी बात को लेकर पुत्र के साथ नाराज हो जाए तो माँ दोनों के बीच पुत्र के पक्ष में बीच-बचाव करती है। जब कभी भी बेटे के जीवन में कोई तकलीफ होती है तो उसके अन्तर्मन से.... हे मेरी माँ.... आवाज ही निकलती है! परमात्मा को वह बाद में याद करता है। पिता घर गृहस्थी की रेलगाड़ी का ड्राइवर है जो सवेरे उठकर काम पर जाता है, कमा कर लाता है। हर परिवार के सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने की कोशिश करता है। वह अपने बेटे और बेटी को राजकुमार तथा राजकुमारी बनाकर पालता है और उनकी सारी ख्वाहिशें तथा फरमाइशें पूरी करता है।

माँ-बाप जब तक जिन्दा रहते हैं अपने बच्चों की चिन्ता अपने ऊपर ले लेते हैं। बच्चों को भी चाहिए कि वह, उनकी सम्पत्ति पर कब्जा करके उन्हें घर से ना निकाले या वृद्ध आश्रम ना भेजें। हजारों साल पहले श्रवण कुमार के द्वारा अपने अंधे बूढ़े माँ-बाप को बैंगी में बिठाकर तीर्थ कराने की बात लोग आज भी याद करते हैं। अपने माँ-बाप में उसे अगर भगवान के दर्शन ना होते तो वह ऐसा कदापि ना करता। जब अंधे माँ-बाप को दशरथ के द्वारा गलती से श्रवण कुमार के मारे जाने का पता चलता है तो वे रुदन करते हैं और विलाप करते हुए पुत्र वियोग में प्राण त्याग देते हैं। यह यातना हम आज के माँ-बाप भी अपने बच्चों के बारे में महसूस करते हैं। ऐसे में माँ-बाप से बढ़कर बेटे-बेटियों के लिए पूजनीय क्या हो सकता है? ध्रुव भगत, प्रहलाद् भगत को भगवान के प्रति लगन लगाने वाली माँ ही थी, श्री कृष्ण जी का अपनी माँ यशोदा के साथ गहरा प्रेम था, शिवाजी को वीर बहादुर बनाने वाली उनकी माँ जीजाबाई थी। माँ तो प्रथम गुरु होती है जो बच्चों को शिक्षा-दीक्षा देती है और पिता अपने बेटे का बचपन में कभी घोड़ा बनता है, कभी कंधे पर बिठाकर इधर-उधर शैर करवाता है, कभी उंगली पकड़कर चलना सिखाता है, गिरने पर बचपन से लेकर सारी उम्र तक उसको सम्भालने का काम करता है! बहुत बदकिस्मत होते हैं वे बच्चे जिन्हें अपने माँ-बाप का लाड-प्यार, संस्कार तथा मार्गदर्शन प्राप्त नहीं होता। माँ-बाप के लिए उनके बच्चे ही दुनिया की सबसे बड़ी धन, सम्पत्ति, जायदाद तथा दौलत होते हैं। माँ-बाप की दुआ कभी खाली नहीं जाती। माँ-बाप तथा गुरु जीते जागते चलते फिरते बच्चों के भगवान होते हैं। सुबह सवेरे उठकर अपने माता-पिता के चरण छूना तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त करना भारतीय संस्कृति का एक भाग रहा है। आप अपने माता-पिता से कितना मर्जी कटु वचन बोलो, दुर्व्यवहार करो, अगर दिल से पश्चाताप करते हुए क्षमा याचना करो, माँ-बाप उबले हुए दूध की तरह है बहुत ही जल्दी ठण्डे हो जाते हैं और आपको आशीर्वाद देते हैं। किसी मन्दिर मस्जिद अथवा गुरुद्वारे जाने की जरूरत नहीं, आपके भगवान आपके पास हैं, आपके घर में हैं, उनकी सेवा करो, उनको खुश करो, जिसने माँ-बाप को सेवा करके खुश कर दिया, समझो उसने रुठा हुआ परमात्मा मना लिया। जब आपके बच्चे आपके द्वारा श्रवण कुमार बनकर माता-पिता की सेवा करते हुए देखेंगे तो निश्चित तौर पर आपके बुढ़ापे में वह भी आपकी सेवा करेंगे। आप उनसे सेवा करवाना चाहते हो या नहीं यह आप पर निर्भर करता है। अपने माँ-बाप की जीते जी कदर करो सेवा करो, उनके मरने के बाद आप चाहे कितने भी दिखावे के तौर पर महंगे मृत्युभोज आयोजित कर लो, माँ-बाप की आत्मा आपको आशीर्वाद देने वाली नहीं। हमारे माँ-बाप ही हमारे सुपर हीरो हैं। यह बात हमें जितनी जल्दी समझ में आ जाए, अच्छा है। ना केवल माँ-बाप को सुख मिलेगा और भी हमें आशीर्वाद देंगे बल्कि हम अपने बच्चों से वैसा करवाने की भूमिका भी तैयार कर रहे होंगे। माँ-बाप की सेवा करके उनकी आयु जितनी लम्बी हो गई कुछ नहीं आपको लगेगा कि अभी हम जवान हैं। माँ-बाप के महत्व को ध्यान में रखकर मुझे बार-बार.... छोटे नवाब.. फिल्म में महमूद के द्वारा गाया हुआ यह गाना याद आता है-

इलाही तू सुन ले, हमारी सदा।
सलामत रहे छाया माँ-बाप की।।

प्रोफेसर शाम लाल कौशल
रोहतक-१२४००१ (हरियाणा), मोबाइल- ९४१६३५९०४५

स्वास्थ्य

आहार के पाचन में पित्त की मुख्य भूमिका होती है। प्राकृत और विकृत भेद से पित्त दो प्रकार का होता है। सुश्रुत संहिता में प्राकृत पित्त का रस कटु बताया है। यही पित्त जब विदग्ध (विकृत) हो जाता है तब इसका रस अम्ल में परिवर्तित हो जाता है। **'अम्लं विदग्धं च तत् पित्तम्, अम्लपित्तम्'** अर्थात् निदान सेवन से प्रकुपित पित्त जब अम्लता को प्राप्त होता है तब अम्लपित्त कहलाता है।

कारण

- ☞ अति अम्ल अति उष्ण पदार्थों का सेवन।
- ☞ मद्य का अधिक सेवन।
- ☞ पित्त प्रकोपक अन्नपान, विदाही अन्न सेवन।
- ☞ मात्रा तथा संयोग विरुद्ध भोजन, दुष्टान्न सेवन।
- ☞ कुलत्थ का अधिक सेवन।
- ☞ भोजन के साथ अधिक जलपान।
- ☞ वेगावरोध, धूम्रपान, चिन्ता, भय तथा शोक।
- ☞ नमीयुक्त वातावरण तथा आहार।
- ☞ वर्षा ऋतु के प्रभाव से पूर्व से संचित पित्त जब विरुद्ध भोजन, विकृत भोजन, अत्यधिक अम्ल तथा पित्त प्रकोपक आहार एवं पान करने वाले व्यक्ति में विदग्ध होकर अम्लपित्त को उत्पन्न कर देता है।

सामान्य लक्षण

भोजन का न पचना, जी मिचलाना और उल्टी होना, कड़वी एवं खट्टी डकारें आना, कंठ व हृदय प्रदेश में जलन, शरीर में भारीपन, सिर दर्द, मल पतला होना, पेट में अफारा, भोजन में अरुचि, अकारण थकान महसूस होना।

शास्त्रों में उर्ध्वग एवं अधोक भेद से दो प्रकार का अम्ल पित्त बताया गया है। उर्ध्वग अम्लपित्त में हरे, पीले, नीले, काले, हल्के या गहरे लाल रंग का खट्टा अति चिपचिपा वमन होता है। रोगी को खट्टी डकारें आती हैं। हृदय, गले व उदर में जलन होती है। शिरःशूल होता है।

अद्योग अम्लपित्त में तृषा दाह मूर्च्छा, भ्रम एवं मोह उत्पन्न होता है। हरे, पीले, काले व रक्तवर्ण के विविध प्रकार के अतिसार होते हैं। अग्निमांद्य, हल्लास, शरीर पर ददोड़े पड़ना, पसीना व अंगों में पीलापन रहता है।

चिकित्सा

सर्वप्रथम रोगी को अम्लपित्त को उत्पन करने वाले कारणों का त्याग कर हल्का सुपाच्य भोजन करना चाहिए। तत्पश्चात् हरीतकी चूर्ण या अविपत्तिकर चूर्ण ५ ग्राम लेकर (गुनगुने जल से) उदर शुद्धि करें। उसके बाद निम्नलिखित औषधियों का सेवन करें-

- ☞ कामदुधा रस और प्रवाल पंचामृत रस १०-१० ग्राम लेकर २० पुड़िया बनावें। १-१ पुड़िया सुबह-शाम खाली पेट गुलकन्द, द्राक्षावलेह या आँवले का मुरब्बा में से किसी एक के साथ लेवें।
- ☞ आँवले व अनार का रस १०-१० मि.ली. सुबह-शाम लेवें।
- ☞ शंखवटी २-२ गोली खाने के बाद जल से लेवें।
- ☞ आजकल की विकृत जीवनशैली के कारण जब भोजन का पाचन सम्यग् रूप से नहीं होता है तो वह भोजन विदग्ध होकर अम्लपित्त की उत्पत्ति करता है। अतः नियत समय पर भोजन करें। बार-बार अधिक चाय के सेवन से बचें। नियमित व्यायाम अपनी शक्ति के अनुसार करें। तेज मिर्च मसाले वाले गरिष्ठ भोजन से बचें। भूख से थोड़ा कम खायें। कब्ज न रहने दें। यदि कब्ज रहती हो तो त्रिफला चूर्ण रात्रि में दूध से लेवें।

- डॉ. वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त चिकित्साधिकारी, आयुर्वेद विभाग, उदयपुर

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

ज्येष्ठ ऋतु की गर्मी का ताप उसके बदन को पसीने से तरबतर कर रहा था, पर वह अपनी धुन में मथुरा की वीथिका में चला जा रहा था। सामने जो समस्या आ गई थी उसको कैसे सुलझाया जाए, उसका ध्यान केवल उसी और लगा था। कोई निराकरण सूझ नहीं रहा था। मैं क्या करूँ कहाँ जाऊँ ने उस युवा संन्यासी के मन मस्तिष्क को मथ दिया था।

अभी-अभी ही तो वह यवुा संन्यासी महान् व्याकरणाचार्य, आर्ष विद्या के सूर्य आचार्य विरजानन्द की कुटिया के दरवाजे से निकला था। ज्ञान पिपासु ज्ञान के स्रोत के पास अंततः पहुँच तो गया था। परन्तु यहाँ नयी समस्या उत्पन्न हो गई। उस प्रज्ञा चक्षु आचार्य के अपने कुछ नियम थे। सबसे पहली बात जो उन्होंने कही कि जितने भी अनार्ष ग्रन्थ तुमने पढ़े हैं उन्हें भूल जाओ। यद्यपि यह कोई सरल काम नहीं था। आज से डेढ़ सौ वर्ष पहले किस प्रकार से ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई होंगी इसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता, परन्तु फिर भी गुरु के वचन शिरोधार्य करके वैसे सारे ग्रन्थों को यमुना में

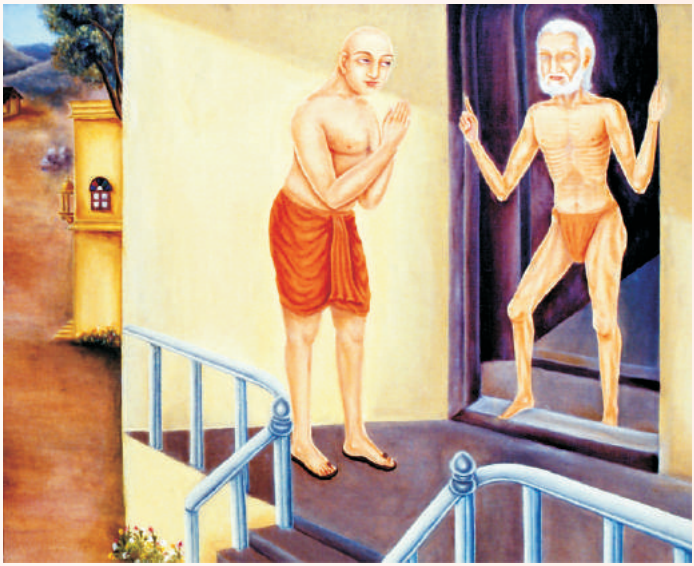

प्रवाहित कर दिया। फिर यह भी कहा गया कि जो कुछ पढ़ा है उसको भूल जाओ। यह भी कोई आसान काम नहीं होता, परन्तु उसका व्रत भी धारण कर लिया।

परन्तु दूसरी समस्या का क्या किया जाए? गुरुवर विरजानन्द का नियम था कि वह संन्यासियों को नहीं पढ़ाते थे कारण कि उनके भोजन और निवास इत्यादि की जो समस्या होती थी उसकी वजह से वे तल्लीनता से दत्त चित्त हो करके विद्या ग्रहण नहीं कर सकते थे। अतः गुरु मुख से यही कहा गया कि सबसे पहले अपने निवास और अपने भोजन आदि की व्यवस्था करो तब पढ़ने के लिए यहाँ आना। बस यही वह समस्या थी जिसके निदान का स्रोत ढूँढ़ने यह युवा संन्यासी मथुरा की गलियों में भटक रहा था। उसे तो मथुरा में कोई जानता भी नहीं था और यह गठे शरीर और भव्य आकृति वाला साधु भविष्य का विश्व विख्यात वैदिक धर्म का पुनरुद्धारक महर्षि होगा, तत्समय में इसका तो कोई अनुमान भी नहीं लगा सकता था, अतः सहायता हेतु संभावित मनुष्यों की पंक्ति तो अभी भविष्य के गर्भ में थी। आज तो वे नितान्त असहाय अवस्था में केवल

प्रभु के आश्रय में थे।

यह भी सत्य है कि प्रभु भी संकल्पवान और पुरुषार्थी मनुष्यों का साथ देते हैं और ऐसा ही हुआ। दयानन्द को जोशी बाबा अमर लाल मिल गए। क्या ही श्रद्धालु पुरुष थे। निरन्तर अध्ययन काल में एक भी दिन ऐसा नहीं था कि दयानन्द जी के भोजन करने से पहले अमरलाल ने भोजन कर लिया हो। अमर लाल की इस महती सहायता को महर्षि दयानन्द ने सदैव स्मृत रखा, रखना ही था। अगर उस दिन अमरलाल ने इस युवा साधु के आवास और भोजन का प्रबन्ध ना किया होता तो दयानन्द जैसे शिष्य को गुरुवर विजानन्द जैसा गुरु नहीं मिला होता।

महर्षि दयानन्द की जीवनी लेखक देवेन्द्र बाबू ने बड़े ही भावपूर्ण शब्दों में लिखा है-

'अमरलाल को क्या खबर थी कि वह उक्त अपरिचित संन्यासी का पालन-पोषण कर के भारत के ही नहीं प्रत्युत् सारी पृथ्वी के धर्मबुभुक्षुओं को अन्न दे रहा है। अमरलाल तू धन्य है। दयानन्द दिवाकर में जो तेजपुंज था उसके संचय में तेरा भी भाग है और जिन्होंने उस दिवाकर के प्रकाश से अपने हृदयाविष्ट तिमिर राशि को छिन्न-भिन्न किया है तू भी उनकी श्रद्धांजलि का अधिकारी है।' उक्त कथन में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है, ऐसा हमारा भी मानना है।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

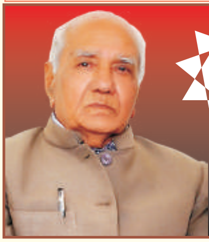

19 August

इस न्यास के न्यासी, सौम्य, मधुर स्वभाव व उदार प्रवृत्ति के स्वामी श्री शुद्धबोध जी शर्मा को उनके जन्मदिवस के पावन अवसर पर न्यास के सभी न्यासियों, अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं की ओर से ढेरों बधाईयाँ।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

विश्व वेद सम्मेलन

२०१ कुण्डीय चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं विश्व वेद सम्मेलन की परिकल्पना करने वाली संस्था वेदविद्या प्रसार न्यास; प्रयागराज और इसके संयोजक वेद-वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, महर्षि दयानन्द नगर; धनपतगंज, कुशभवनपुर, सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश), से इस कार्यक्रम को भारत भर में प्रचारित-प्रसारित करने के लिए श्रद्धेय शुचिषद् मुनि, श्री मधुप नारायण शुक्ला, श्री अमित आर्य की टीम उदयपुर पधारी। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य से उनके निवास पर इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया और तत्पश्चात् वे महर्षि दयानन्द जी की कर्मस्थली, सत्यार्थ प्रकाश की रचनास्थली 'नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र; उदयपुर' के अवलोकन हेतु नवलखा महल में पधारे और यहाँ के समस्त नवाचारों को देखकर सभी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई और उन्होंने अपने भाव एक वीडियो के अन्तर्गत प्रकट किए। उनका भी अन्य महानुभावों की भाँति यही मानना था कि इतने आकर्षक सुन्दर नवाचारों को प्रस्तुत करके ही उन लोगों को आकर्षित करके बुलाया जा सकता है जो अभी आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के विचारों से जुड़े हुए नहीं हैं और जब वे एक बार आ जाएँ तो हर सम्भावित प्रभावोत्पादक तरीके से उन तक वैदिक संस्कृति को पहुँचाने का कार्य किया जाए। नवलखा महल स्थित यह प्रकल्प निश्चित रूप से इस ओर बहुत बड़ा कार्य कर रहा है और यह अपने प्रकार से आर्य जगत् का पहला प्रकल्प है। श्रद्धेय शुचिषद् मुनि जी के नेतृत्व में यह टीम एक बहुत बड़ा कार्य करने जा रही है इनका संकल्प पूरा हो, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

– अशोक आर्य

शैक्षिक संस्थानों के प्रधानों ने किया नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन

उदयपुर। दिनांक १५ जुलाई २०२३। उदयपुर के गुलाब बाग स्थित 'नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र' का उदयपुर के शैक्षिक संस्थानों का एक दल अवलोकन करने के लिए आया। दल में विट्टी इन्टरनेशनल

वर्ल्ड स्कूल की प्रधानाचार्या, डीएवी स्कूल की प्रधानाचार्या, सेन्ट्रल एकेडमी की शिक्षिका, हैप्पी होम सीनियर सैकण्डरी स्कूल की शिक्षिका तथा जागृति विद्या निकेतन स्कूल के निदेशक थें।

इस अवसर पर सर्वप्रथम संस्था प्रधानों का ओ३म् दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि नवलखा महल वह स्थल है जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह जी के आमंत्रण पर उदयपुर आये और लगभग साढ़े छः माह यहाँ विराजकर सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया। पूर्व में यहाँ राजस्थान सरकार के आबकारी विभाग का शराब का गोदाम था। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयासों के परिणामस्वरूप राजस्थान सरकार से यह १९९२ में आर्य समाज को जीर्ण-शीर्ण अवस्था में प्राप्त हुआ। तब आर्य समाज के भामाशाह स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती (पूर्व नाम श्री हनुमान प्रसाद चौधरी) ने एक करोड़ रुपये की दान सरिता से इसके जीर्णोद्धार का कार्य करवाया। तब से लेकर अब तक यहाँ कई प्रकार के प्रकल्प दानदाताओं के सहयोग से तैयार किए गए हैं।

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के तहत विभिन्न प्रकार के प्रकल्प यथा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, मधु-हरि प्रेरणा कक्ष, संस्कार वीथिका, दीनदयाल सुरेश चन्द्र आर्य मल्टीमीडिया सेन्टर इत्यादि प्रकल्पों के माध्यम से नई पीढ़ी यहाँ से प्रेरणा प्राप्त करती है।

इस अवसर पर विट्टी इन्टर नेशनल स्कूल की प्रभारी श्रीमती मेघा पारिक, शिक्षिका श्रीमती इशिका कालरा, श्रीमती रानू वगेरिया, डीएवी स्कूल के प्राचार्या श्रीमती वन्दना, सेन्ट्रल एकेडमी की शिक्षिका रूनू बनर्जी, हैप्पी होम सीनियर सैकण्डरी स्कूल की शिक्षिका उर्मिला, जागृति विद्या निकेतन स्कूल के निदेशक श्री नरपसिंह जी ने अवलोकन किया। इस अवसर पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र की युवा इकाई मण्डल की श्रीमती ऋचा पीयूष, श्रीमती उषा चौहान, भाग्यश्री शर्मा, सुकृत मेहरा, जयेश आर्य, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पुरोहित श्री नवनीत आर्य, श्री देवीलाल पारगी, श्रीमती दुर्गा, मीडिया प्रभारी श्रीमती मधु अग्रवाल, कार्यालय मंत्री श्री भंवर लाल गर्ग इत्यादि उपस्थित थे।

– भँवर लाल गर्ग; कार्यालय मंत्री, नवलखा महल, उदयपुर

कोटा। लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला आर्य उपप्रतिनिधि सभा; कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा के विज्ञान नगर स्थित निवास पर पहुँचे और उनसे आर्य समाज से सम्बन्धित जानकारियों को सांझा किया। आर्य सभा के मीडिया प्रभारी आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने शनिवार को जानकारी देते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के २००वें जन्मोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना के १५० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला आर्य उपप्रतिनिधि सभा; कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा के निवास पर पधारे तथा कोटा में आर्य समाज द्वारा संचालित कार्यक्रम चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया। आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए माननीय बिरला जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वेदों के ज्ञान व शिक्षा पर आधारित आर्य समाज के विचार भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति को ऊर्जा प्रदान करते हैं इन पर चलकर श्रेष्ठ व संस्कारवान् समाज का निर्माण सम्भव है। बिरला ने कहा कि कोटा में अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज द्वारा जो गतिविधियाँ संचालित की जा रही है वह सभी के लिए प्रेरणा दायक है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधियों के साथ सभा के अधिकारीगण उपस्थित थे।

– एडवोकेट चन्द्र मोहन कुशवाह, वरिष्ठ मंत्री

पश्चिम का अन्धानुकरण न करें

हमारे देश में प्रायः लोगों की यह प्रवृत्ति पायी जाती है कि पाश्चात्य संस्कृति और उसकी चकाचौंध है उसका अनुसरण करने में आज की युवा पीढ़ी पसन्द करती है। इसी कारण आज शराब और अन्य नशा देश की युवाशक्ति को खोखला कर रहे हैं। परन्तु पश्चिम में इन सबके दुष्परिणाम भी अब सामने आ रहे हैं इसलिए वे लोग इनसे तौबा कर रहे हैं। ऐसा ही एक समाचार सामने आया है। अमेरिका में सेन्ट फ्रान्सिसको एक प्रान्त है जहाँ ऐंकर ब्रेविंग कम्पनी जो बीयर बनाती है और १२७ साल पुरानी है अब बन्द होने की कगार पर है कारण बीयर और शराब की बिक्री इतनी कम हो गई है कि कम्पनी कई साल से घाटे में है। याद रखें कि इस कम्पनी की बीयर १९७० के दशक में अमेरिकियों का पसन्दीदा ब्राण्ड था और अब बिक्री अत्यधिक कम हो जाने के कारण कम्पनी के मालिकों ने यह तय किया है कि इसको बन्द कर दिया जाये। हम इसको एक शुभ समाचार के रूप में देखते हैं और आशा करते हैं कि भारत में भी हमारी युवा पीढ़ी नशे के सभी रूपों से अपने आपको मुक्त करेगी क्योंकि नशे के पश्चात् लोग अपने आपको, अपने परिवार को बर्बाद कर देते हैं और समाज में भी ऐसी हरकतें कर बैठते हैं कि उनको शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। ऐसा ही एक समाचार मुजफ्फरपुर से प्राप्त हुआ। बिहार के मुजफ्फरपुर से एक हैडमास्टर शराब के नशे में स्कूल जा पहुँचा और नशे में उसे यह भी ध्यान नहीं था कि उसने कपड़े कौन से पहन रखे हैं वह केवल लूंगी बनियान में ही विद्यालय जा पहुँचा। उसने बच्चों के साथ डांस किया और इस दौरान एक महिला शिक्षिका के साथ अश्लील हरकत भी की। स्वाभाविक था कि इस पर बवाल मचता वही हुआ और शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी हैडमास्टर उमेश ठाकुर को हिरासत में ले लिया। क्या ऐसे व्यक्ति को कभी शिक्षक कहा जा सकता है ऐसे लोगों के बारे में पढ़कर प्राचीन भारत की पवित्र गुरु परम्परा स्मरण होती है।

श्री मोहन लाल गोयल ब्रिटेन में सम्मानित

श्री मोहन लाल गोयल डीएवी संस्थान के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक और एक

प्रमुख शिक्षाविद् के रूप में जाने जाते हैं और अवकाश प्राप्ति के पश्चात् सक्रियता के साथ समाज सेवा के कार्यों में संलग्न रहते हैं। न्यास के प्रति भी आप स्नेहभाव रखते हैं। हम सभी गौरव का अनुभव करते हैं कि उन्हें ब्रिटेन के गुरुनानक विश्वविद्यालय में वहाँ साऊथ हॉल में सम्मानित किया गया है। गोयल साहब को इसके लिए ढ़ेर सारी बधाई एवं शुभकामनाएँ। न्यास, सत्यार्थ सौरभ एवं नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र परिवार आपके दीर्घायुष्य की मंगल कामना करता है।

– भवानीदास आर्य; मंत्री-न्यास

संस्कारों के अभाव में पारीवारिक मूल्यों का पतन

हत्या आत्महत्याएँ रोजाना सामने आती हैं। यू.पी. के अयोध्या जिले में एक ग्राम है रूदोली। भारतीय पारीवारिक परम्परा में माता-पिता का दायित्व होता है कि वे बच्चों को अच्छे संस्कार दें और ऐसे हर कार्य पर उन्हें समझाएँ जिससे कि बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। पर रूदोली ग्राम के इस परिवार में १६ साल की एक लड़की की शिकायत पर पुलिस ने पिता को गिरफ्तार कर लिया। कारण क्या था पिता ने सिर्फ यही कहा कि फोन पर और विशेष रूप से लड़कों से बातचीत करना उचित नहीं है। एक दिन जब वह लड़की एक लड़के से फोन पर बात कर रही थी तो अचानक उसके पिता आ पहुँचे और लड़की को मना किया और डांटा पर लड़की ने पिता की बात पर ध्यान न देकर उलटे रूदोली कोतवाली में अपने पिता के खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी कि वे १६ साल की हो चुकी है वयस्क है वो चाहे जिससे बात करे पिता उसे रोकने वाले कौन होते हैं? नतीजा यह हुआ कि रूदोली कोतवाली में पिता के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया।

आत्म हत्या के बढ़ते मामले

ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय समाज से विशेष रूप में युवाओं के जीवन से ईश्वर विश्वास पूर्णतः समाप्त होता जा रहा है कि थोड़ी परेशानी आते ही परिवार में थोड़ा सा मनमुटाव होते ही आत्महत्या के मामले बढ़ते जा रहे हैं। इसका इलाज तो एक ही है कि पारीवारिक मूल्यों की स्थापना की जाए। एक ग्राम में अपनी पत्नी और ससुराली जनों से आहत होकर एक युवक ने अपने आपको गोली मारकर आत्महत्या कर ली। मामला कोई विशेष नहीं था परिवार में जो छुटपुट बाते होती हैं वैसा ही मामला था परन्तु जैसाकि हमने कहा कि पारीवारिक मूल्य बिखरते जा रहे हैं इसी से युवक अपने पर संयम नहीं रख सका और अपने जीवन का अन्त कर लिया। ये अब आये दिन रोज की घटनाएँ हैं जो समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं बहुत कुछ सिखा सकती हैं। बशर्ते इन पर ध्यान देकर के इनके मूल कारणों की पहचान समाजशास्त्री करें और भारतीय मनीषा ने जो वैज्ञानिक पद्धतियाँ निर्धारित की हैं कि ऐसी समस्याएँ सिर भी न उठा पाये और उनका अवलम्बन लेते हुए समाज में संस्कारों से युक्त शिक्षा हो ऐसा प्रबन्ध करें।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – १२/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – १२/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम मेघवालय; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान आर्य समाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती ऊषा सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेशचन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री हर्षवर्धन आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्रीमती कंचन देवी सोनी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला (हरियाणा), श्री नन्दलाल आर्य; बेतिया (बिहार), श्री रमेशचन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ 18 पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव

ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव को लेकर इस प्रकार की काल्पनिक धारणाएँ इसलिए बनीं क्योंकि लोगों ने परमात्मा-प्रदत्त वेद ज्ञान को छोड़ दिया। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने इसी सातवें समुल्लास में जहाँ एक ओर ईश्वर के सम्बन्ध में वैज्ञानिक एवं सटीक और प्रामाणिक व्याख्या की है वहीं दूसरी ओर ईश्वर द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान के बारे में अपने तर्कयुक्त विचार प्रस्तुत करके संसार का महान् उपकार किया है। उन्होंने प्रमाणित किया कि वेद ईश्वरकृत, निर्भ्रान्त, सार्वभौमिक, ज्ञान-विज्ञान युक्त और समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक है। उनका मत है कि व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट तथा समूचे विश्व का कल्याण केवल मात्र एक परमात्मा की उपासना और वेद ज्ञान की शरण में आकर ही हो सकेगा। इसी से समस्त मत-मजहबों, सम्प्रदायवाद एवं क्षेत्रवाद आदि का निराकरण तथा व्यक्ति और समाज की सब समस्याओं का समाधान हो सकेगा तथा व्यक्ति अपने जीवन के सम्पूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेगा। हमारे शास्त्रों में मानव जीवन का लक्ष्य भोग और अपवर्ग बताया गया है अर्थात् व्यक्ति अपने जीवन को सुखपूर्वक करके मोक्षानन्द के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करे। यह, वेद की सच्ची आँख मिलने पर ही सम्भव हो सकेगा। वेद रूपी परमात्मा का सच्चा ज्ञान ही वे सनातन चक्षु हैं जिनके द्वारा हम विवेक-अविवेक, धर्म-अधर्म तथा सत्य और असत्य की पहचान करके विवेक, धर्म और सत्य मार्ग का अवगहन कर सकेंगे। महर्षि जी ने व्यक्ति की वास्तविक उन्नति के लिए एक आधार दिया है कि उसे असत्य का त्याग और सत्य को ग्रहण करना चाहिए। इस सत्य व असत्य की पहचान हमें वेद ही करा सकता है। महर्षि जी ने अपने ग्रंथों और प्रवचनों में व्यक्ति को सम्पूर्ण और सार्थक जीवन जीने के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थो को प्राप्त करने का उल्लेख बार-बार किया है। वेद मार्ग पर चलकर ही हम इन पुरुषार्थों की उपलब्धि कर सकते हैं। ईश्वर तथा वेद के सम्बन्ध में देव दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में जो विवेचन किया है वास्तव में वह अनुपम एवं अद्वितीय तथा मानव मात्र के लिए अनुकरणीय है। वेद नाम ज्ञान का है जो सूर्य के समान प्रकाशित होकर हमारे अज्ञान को समाप्त करके चतुर्दिक उन्नति का आधार प्रदान करता है। आश्चर्य है कि मानव इस ज्ञान से दूर भाग कर स्वयं ही अपने जीवन को नष्ट कर रहा है। वेद से विमुख होना ठीक ऐसा ही है जैसे कोई आँखों वाला व्यक्ति अपनी आँखे बन्द करके सूर्य को ही मानने से मना कर दे। इससे सूर्य का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा मगर वह व्यक्ति ही आँख होते हुए भी ठोकरें खाकर अपने जीवन को दु:खमय बना लेगा। आज लोगों की ठीक ऐसी ही स्थिति है। इसलिए धर्म और परमात्मा के नाम पर आज चारों और ठगी और मक्कारी का बोलबाला है तथा इसके कुपरिणाम भी हमारे सामने आ रहे हैं। व्यक्ति, ईश्वर एवं ईश्वरीय ज्ञान से जितना दूर भागेगा, दु:ख, क्लेश और अव्यस्थाएँ उतनी ही अधिक बढत्रती चली जाएँगी। यह ध्रुव सत्य है कि व्यक्ति को अन्नतः सुख और शान्ति प्राप्त करने के लिए एक न एक दिन ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान की शरण में आना ही पड़ेगा क्योंकि वही सुख-शान्ति का असली स्रोत है। स्मरन रहना चाहिये।

ईश्वर विश्वास ही एक मात्र सहारा

श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ।। – ऋग्वेद २/१२/५

हे मनुष्यों! वह परमैश्वर्यवान प्रभु है, इसे जानकर, उस पर श्रद्धापूर्वक भरोसा रखो।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

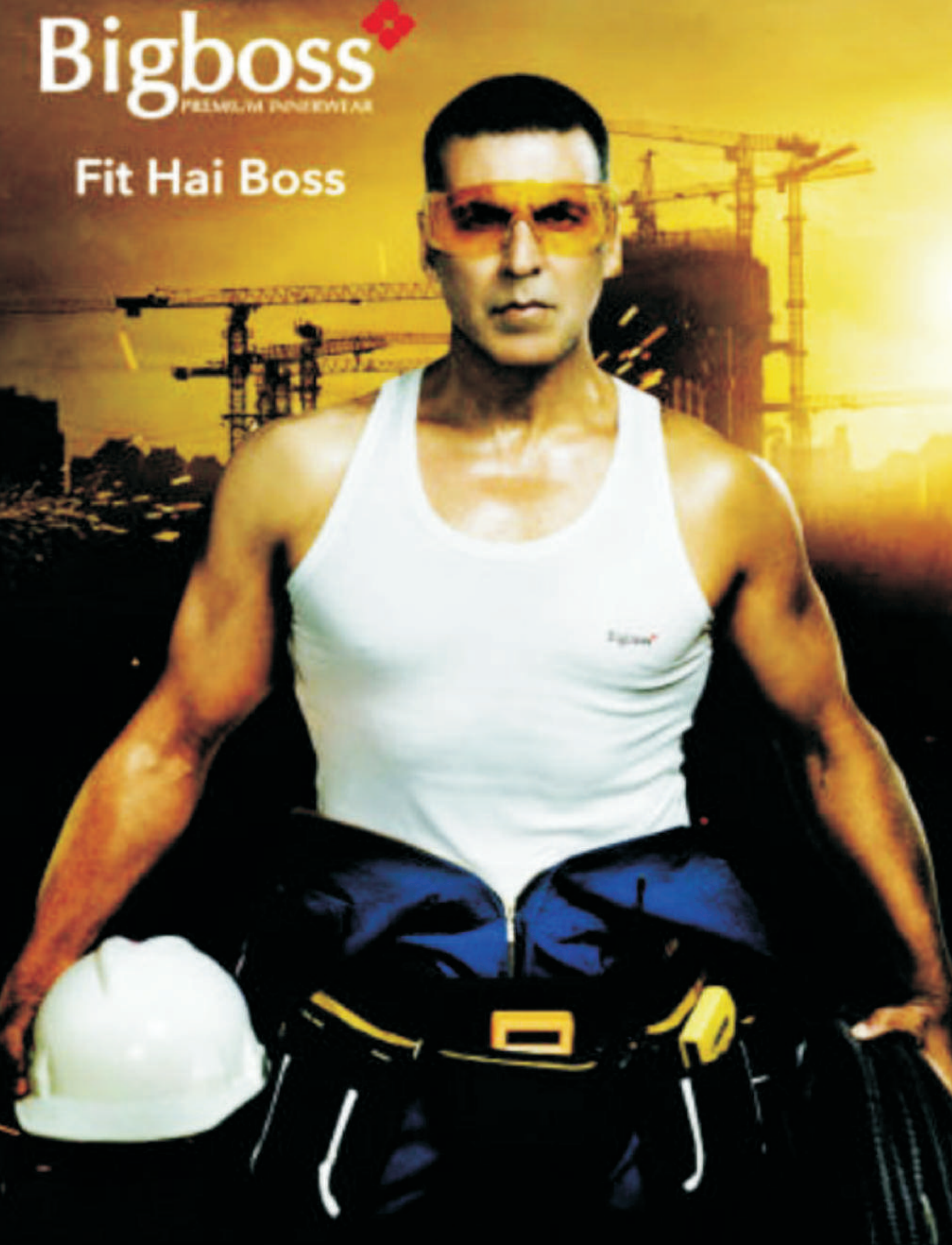

Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

यद्यपि राजा को ऐश्वर्य्यवान् और प्रजापालन में समर्थ होने से श्रेष्ठ मानें तो ठीक है परन्तु जो अन्यायकारी पापी राजा हो उसको भी परमेश्वरवत् मानते हो तो तुम्हारे जैसा कोई भी मूर्ख नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश द्वादश समुल्लास पृष्ठ ३९१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर